साध्य दैनिक 4PM

कुछ भी उपयुक्त हासिल करने के लिए तीन महत्तवपूर्ण चीजें हैं – कड़ी मेहनत, दृढ़ता, और कॉमन सेन्स।
–थॉमस ए. एडीसन

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 118 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, गुरुवार 4 जून, 2026

आयरलैंड दौरे से पहले भारत को मिलेगा टी20... 7 | दुनिया को शिक्षा देने वाले देश... 3 | बीजेपी ने देश का स्वर्ण-मान बेच... 2

दिल्ली हो या मुजफ्फरपुर सिस्टम जस का तस, सब भगवान भरोसे

होटल के बाद अस्पताल में आग, 4 मरीजों की मौके पर मौत

- » 20 मरीजों की हालत अत्यंत दयनीय
- » दिल्ली के होटल में आग लगने से कल ही हुई थी 21 लोगों की मौत
- » 6 कमरे के होटल को बना दिया था 26 कमरों का होटल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। चारों तरफ से आती मौत की खबरों ने आम आदमी को विचलित कर कर दिया है। कल दिल्ली के होटल में लगी आग के बाद आज खबर बिहार के मुजफ्फरपुर स्थित प्रसाद अस्पताल के आईसीयू में शॉर्ट सर्किट के कारण लगी भीषण आग से आधा दर्जन मरीजों की मौत की खबर आ रही है।

हद तो तब हो गयी जब आग लगी तो हास्पिटल स्टाफ असहाय मरीजों को बेड पर तड़पता छोड़कर फरार हो गया। हादसे के बाद अस्पताल प्रबंधन पर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है और लोग तरह तरह के आरोप लगा रहे हैं। मौके पर मौजूद मरीजों के परिजनों ने हॉस्पिटल स्टाफ पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना था कि स्टाफ मरीजों को बचाने की जगह उन्हें तड़पता छोड़कर दुर्घटनास्थल से भाग खड़ा हुआ। बताया जा रहा है कि आईसीयू में शॉर्ट सर्किट के कारण यह दर्दनाक हादसा हुआ। 20 मरीजों को तुरंत दूसरे अस्पताल में शिफ्ट किया गया। इनमें से कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। मृतकों का आंकड़ा बढ़ सकता है।

नियम पालन के लिए नहीं तोड़ने के लिए बने

सच्चाई यह है कि हमारे यहां नियम अक्सर पालन के लिए नहीं बल्कि तोड़ने के लिए बनाए जाते हैं। लाइसेंस लेने वाला रास्ता ढूंढ लेता है निरीक्षण करने वाला आंखें मूंद लेता है और सिस्टम तब तक चुप रहता है जब तक कोई त्रासदी सुर्खियां न बन जाए। मालवीय नगर की यह आग एक इमारत में नहीं लगी थी यह उस प्रशासनिक संस्कृति में लगी आग है जहां जवाबदेही हमेशा मरने वालों के साथ दफन हो जाती है। अगर इस बार भी जांच सिर्फ मालिक की गिरफ्तारी तक सिमट गई और उन अधिकारियों की जिम्मेदारी तय नहीं हुई जिन्होंने इस खेल को फलने-फूलने दिया तो समझ लीजिए कि अगली आग की उलटी गिनती आज से ही शुरू हो चुकी है।

आईसीयू में मरीज छोड़कर भागे डाक्टर

दूसरे अस्पतालों में मरीजों को शिफ्ट कराया गया

मुजफ्फरपुर के डीएम सुब्रत कुमार सेन ने बताया है कि कई मरीजों को सुरक्षित निकालकर दूसरे अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि आईसीयू में आग लगने से भारी मात्रा में धुआं फैल गया। मरीजों को बाहर निकालने की कोशिश की गई। लोगों के अनुसार, यूनिट के इंचार्ज को भी अन्य मरीजों के साथ गंभीर चोटें आई हैं। अब तक चार से ज्यादा लोगों की मौत की खबर है। आईसीयू और सीसीयू में भर्ती अन्य मरीजों को इलाज के लिए पास के अस्पतालों में शिफ्ट कर दिया गया है। जिले के एसएसपी कान्तेश मिश्रा ने बताया कि यह घटना लगभग 3.30-3.45 बजे हुई। माना जा रहा है कि आईसीयू में शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगी। आग पर तुरंत काबू पा लिया गया। हालांकि, भर्ती 12-13 मरीजों को अलग-अलग अस्पतालों में शिफ्ट कर दिया गया है। वहां मौजूद एक शख्स ने बताया कि रात करीब 3 बजे अस्पताल का आईसीयू पूरी तरह से धुएं से भर गया था। स्थिति को संभालने के लिए वहां कोई मौजूद नहीं था। वहां मौजूद सुरक्षाकर्मी भाग खड़े हुए। धुएं की वजह से आईसीयू में रुमाल बांधकर जाने पर भी सांस लेने में दिक्कत हो रही थी।

सीएम ने जताया दुख

बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने इस हादसे पर दुख जताया है। उन्होंने एक्स पोक्ट में लिखा कि मुजफ्फरपुर के एक निजी अस्पताल में आग लगने से चार व्यक्तियों की मृत्यु अत्यंत दुःखद है। शोक-संतप्त परिजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें तथा परिजनों को इस कठिन समय में संबल दें। सीएम सम्राट ने मृतकों के परिजनों को अविलंब 4-4 लाख रुपये का अनुग्रह अनुदान प्रदान करने का निर्देश दिया गया है। स्थानीय प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद है तथा घायलों के उपचार हेतु सदर अस्पतालों में समुचित व्यवस्था की गई है।

सुरक्षा इंतजामों की नियमित जांच पर सवाल

हैरानी की बात यह है कि जिस इलाके में विदेशी मरीजों और मेडिकल टूरिस्ट्स का लगातार आना-जाना रहता है जहां हर दिन दर्जनों लोग ठहरते हैं वहां सुरक्षा इंतजामों की नियमित जांच आखिर किसने की? क्या फायर एनओसी सिर्फ एक कागज थी? क्या अधिकारियों ने कभी यह देखने की जरूरत नहीं समझी कि जिस भवन में लोग ठहर रहे हैं वहां आपदा की स्थिति में बाहर निकलने का रास्ता भी है या नहीं? हर बड़े हादसे के बाद वही पुराना संवाद सुनाई देता है दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। लेकिन असली सवाल यह है कि दोषी सिर्फ होटल मालिक है या फिर वह पूरी व्यवस्था भी कटघरे में खड़ी है जिसने वर्षों तक इस खेल को चलने दिया?

दिल्ली अग्निकांड खुलासे पर खुलासे, कटघरे में रेखा सरकार

आग लगने से 21 लोगों की मौत की खबर से पूरे देश में सिहरन है और अब जांच के बाद खुलासे पर खुलासे हो रहे हैं और जो तथ्य सामने आ रहे हैं उसमे पूरी तरह से दिल्ली सरकार दोषी दिखायी दे रही है। दरअस्ल पकड़े गये लवकेश बाजाज का अस्ल चेहरा लाइसेंस के नाम पर लाशों का कारोबार करने वाले कारोबारी के रूप में सामने आया है। दिल्ली के मालवीय नगर में 21 लोगों की मौत सिर्फ आग से नहीं हुई बल्कि उस व्यवस्था की वजह से हुई जिसने नियमों को फाइलों में कैद कर रखा है और जुगाड़ को कानून से ऊपर बैठा दिया है। होटल फ्लोरिश में लगी आग ने सिर्फ कमरों को नहीं जलाया उसने प्रशासनिक दावों निरीक्षण व्यवस्था और लाइसेंस सिस्टम की पोल भी राख कर दी। अब खुलासा हुआ है कि होटल मालिक लवकेश बजाज ने पूरा खेल ही नियमों की आंख में धूल झोंककर रचा था। प्रॉपर्टी अपने अकाउंटेंट के नाम पर खरीद ली ताकि सरकारी नियमों की शर्तें भी पूरी दिखें और कारोबार भी चलता रहे। सवाल यह है कि अगर यह चालाकी आज पुलिस की जांच में पकड़ में आ गई तो वर्षों तक लाइसेंस देने वाले विभागों को यह दिखाई क्यों नहीं दी? यही तो इस देश की सबसे बड़ी त्रासदी है। हादसे के बाद प्रशासन शेर बन जाता है लेकिन हादसे से पहले उसकी आंखों पर पट्टी बंधी रहती है। जब तक लोग जिंदा होते हैं फाइलें सोती रहती हैं। जैसे ही मौतें होती हैं अचानक जांच गिरफ्तारी और कार्रवाई का मौसम शुरू हो जाता है।

बीजेपी ने देश का स्वर्ण-मान बेच दिया : अखिलेश

» पांच ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के जुमले की सुनहरी परत अब उतर गयी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने उन रिपोर्ट्स पर टप्पणी की है जिसमें यह दावा किया गया है कि मुद्रा भंडार बचाने हेतु आरबीआई ने सोना बेचा है को लेकर मोदी सरकार को घेरा है। हालांकि भारत सरकार ने इन दावों का खंडन किया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा कथित तौर पर सोना बेचे जाने की रिपोर्ट्स पर टिप्पणी की है। उनकी टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब केंद्रीय बैंक और भारत सरकार के पत्र सूचना कार्यालय ने दावों को खारिज कर दिया है।

सपा चीफ ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा- बीजेपी ने देश का स्वर्ण-मान बेच दिया है। अब देश की जनता को समझ में आया कि बीजेपी सरकार सोना खरीदने से मना क्यों कर रही थी क्योंकि अगर सोना जनता के पास चला जाता तो ये बेचते कैसे। 5 ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के जुमले की सुनहरी परत अब उतर गयी है।

भाजपाई भ्रष्टाचार ने देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह खोखला कर

दिया। उन्होंने लिखा कि बीजेपी के दावें बेपर्दा हो गये है। जनता इस समाचार के बाद डरकर बैंक जाकर अपने लॉकर खोलकर देख रही है कि सब सही-सलामत है भी कि नहीं? जनता को समझ में आ गया है कि भाजपाई भ्रष्टाचार ने देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह खोखला कर दिया है और विदेशी सत्ताओं के आगे बीजेपी और उनके भ्रमणशील संगी-साथी अब साष्टांग नतमस्तक क्यों हैं।

आरबीआई ने जारी किया बयान

उधर, आरबीआई ने सोने की बिक्री की खबरों को बुधवार को खारिज करते हुए कहा कि भौतिक स्वर्ण भंडार में कोई बदलाव नहीं हुआ है और यह 880.52 टन पर स्थिर बना हुआ है। आरबीआई ने उन खबरों के बाद यह स्पष्टीकरण जारी किया है जिनमें दावा किया गया था कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के प्रभाव से विदेशी मुद्रा भंडार की रक्षा के लिए केंद्रीय बैंक ने लगभग 12 अरब डॉलर मूल्य का सोना बेच दिया है। केंद्रीय बैंक ने बयान में कहा, आरबीआई जोर देकर कहता है कि ये खबरें सही नहीं हैं। उसने आम जनता को सलाह दी कि ऐसे मामलों में समय-समय पर आरबीआई द्वारा जारी आधिकारिक जानकारी पर ही भरोसा करें।

जनता को भुगतना पड़ता है खामियाजा

उन्होंने आगे लिखा,भाजपा सरकार में महा-भ्रष्टाचार के कारण कभी भी, कहीं भी अग्निशमन यंत्रों की व्यवस्था और एक्सपायरी पर कोई काम नहीं किया जाता है, जिसका खामियाजा आम जनता को अपनी जान देकर भुगतना पड़ता है।

सपा प्रमुख ने ये भी लिखा, दिल्ली में तो ऊपर-से-लेकर नीचे तक हर जगह भाजपाई बैठे हैं, देखना ये है कि अब वो इस लापरवाही और भ्रष्टाचार के लिए किसे दोषी ठहराएंगे। इस जानलेवा लापरवाही के लिए सख्त से सख्त कार्रवाई हो और पीड़ितों के परिवारों को मुआवजा घोषित किया जाए। घायलों का अच्छे से अच्छा मुफ्त इलाज किया जाए।

सख्त से सख्त हो कार्रवाई

दिल्ली अग्निकांड से भाजपा के शासन-प्रशासन की पोल खुली

दिल्ली के मालवीय नगर इलाके में आग लगने से 21 लोगों को मौत के बाद बीजेपी की रेखा गुप्ता सरकार को समाजवादी पार्टी प्रमुख और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने बीजेपी को आड़े हाथों लिया है। उन्होंने बीजेपी सरकार को महाभ्रष्ट करार दिया। अखिलेश यादव ने एक्स हैंडल पर लिखा, दिल्ली के मालवीय नगर क्षेत्र में एक रेस्टोरेंट के भीषण अग्निकांड में 21 लोगों के मारे जाने का समाचार बेहद दुखद है। भाजपा के सारे दावों के बीच ऐसे अग्निकांड होना, भाजपा के शासन-प्रशासन की पोल खोल देते हैं।

जल्द भाजपा छोड़ेंगे अमरिंदर सिंह!

» कांग्रेस में फिर वापसी के लगाये जा रहे कयास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के राजनीतिक गलियारों में इस बात की अटकलें तेज हैं कि पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह कांग्रेस में वापसी की तैयारी कर रहे हैं। दिग्गज नेता के करीबी सूत्रों के अनुसार, न केवल कैप्टन अमरिंदर सिंह बल्कि उनके राजनीतिक खेमे का एक बड़ा हिस्सा कांग्रेस में फिर से शामिल होने के लिए उत्सुक है। सूत्रों का मानना है कि कोई भी बड़ा राजनीतिक घटनाक्रम किसी भी क्षण घट सकता है।

कैप्टन अमरिंदर सिंह और उनके समर्थक काफी समय से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में असहज महसूस कर रहे हैं, लेकिन इन भावनाओं को अक्सर निजी बातचीत में ही व्यक्त किया गया है। हालांकि, केवल सिंह ढिल्लों की पंजाब भाजपा अध्यक्ष नियुक्ति और राज्य में हाल ही में हुए नगर निगम चुनाव परिणामों के बाद, माना जाता है कि कैप्टन इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं कि भाजपा में उनका प्रभाव बहुत कम है और पार्टी में रहते हुए 27 के पंजाब विधानसभा चुनावों में उनकी राजनीतिक सफलता की संभावनाएं सीमित

हैं। चुनिंदा पत्रकारों से बातचीत में, कैप्टन अमरिंदर सिंह ने केवल ढिल्लों की नियुक्ति पर खुलकर अपनी नाराजगी व्यक्त की है और कहा है कि उनसे परामर्श नहीं किया गया, जबकि राजनीतिक गलियारों में यह व्यापक धारणा है कि यह निर्णय उनकी सिफारिश पर लिया गया था। कैप्टन और उनके सहयोगियों का मानना है कि शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) के साथ गठबंधन के बिना भाजपा पंजाब में सत्ता में नहीं आ सकती। खबरों के मुताबिक, वे भाजपा के कुछ नेताओं के इस दावे को जमीनी हकीकत से परे मानते हैं कि पार्टी पंजाब में स्वतंत्र रूप से सत्ता हासिल कर सकती है। कैप्टन खेमे में यह समझ भी बढ़ती जा रही है कि अमरिंदर परिवार के लिए भी पटियाला की इकलौती शहरी विधानसभा सीट पर अकेले भाजपा के टिकट पर जीत हासिल करना मुश्किल हो सकता है। उनका मानना ??है कि ऐसी संभावना केवल भाजपा-एसएडी गठबंधन की स्थिति में ही बन सकती है।

कांग्रेस में रहते हुए परिवार को मिली सफलता

इसके विपरीत, कांग्रेस में रहते हुए परिवार को इस निर्वाचन क्षेत्र से पारंपरिक रूप से चुनावी सफलता मिली है, और कई लोगों का मानना है कि 27 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के बैनर तले जीत की संभावना काफी अधिक होगी। ऐसी खबरें हैं कि परिवार इस निर्वाचन क्षेत्र से कैप्टन की बेटी जय इंदर कौर को उम्मीदवार बनाने पर विचार कर रहा है। अब अहम सवाल यह है कि क्या कांग्रेस नेतृत्व उनकी वापसी के लिए तैयार है। जहां कुछ कांग्रेस नेता कैप्टन अमरिंदर सिंह का पार्टी में स्वागत करने के सख्त खिलाफ हैं, वहीं कुछ अन्य इसके पक्ष में हैं।

अपराध में जीरो टॉलरेंस का सरकार का दावा पूरी तरह खोखला : अजय राय

» वाराणसी में विनीत राय हत्याकाण्ड में पीड़ित परिवार से मिले कांग्रेस अध्यक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय वाराणसी पहुंचकर विनीत राय हत्याकाण्ड में पीड़ित परिवार के आवास चन्द्रिका नगर (सिगरा) वाराणसी पहुंचे। उन लोगों से मिलने के बाद उन्होंने भाजपा सरकार पर करारा हमला बोला। उन्होंने कहा आज प्रदेश में अपराधियों ने चारो तरफ भय का माहौल बना दिया है। बता दें गाजीपुर के होटल व्यवसायी आलोक राय के पुत्र विनीत राय की गोली मारकर हत्या कर दर गई थी।

प्रदेश अध्यक्ष ने मृतक की पत्नी के परिजनों से मुलाकात कर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए ढांढस बंधाया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि रोजाना हो रही हत्याओं से प्रदेश दहल गया है। प्रदेश की योगी सरकार रोजाना अपराध में जीरो टालरेन्स के बड़े-बड़े दावे करती है और अपराधियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने का खोखला दावा हर मंच से करती है और दूसरे प्रदेशों में भी जाकर उ0प्र0 की कानून व्यवस्था का

उदाहरण देते हैं किन्तु सच्चाई यह है कि प्रदेश में आम जनमानस में भय का माहौल व्याप्त है। प्रदेश में अपराधी बेलगाम हो गये हैं, जब और जहां चाहते हैं सरेआम हत्या, लूट, बलात्कार जैसी जघन्य घटना को अंजाम दे रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में अपराधी बेखौफ होकर घूम रहे हैं। प्रदेश सरकार की जीरो टालरेन्स का दावा पूरी तरह खोखला साबित हुआ है। अपराधियों पर कानून का खौफ पूरी तरह खत्म हो गया है। यह दो-दो हुई हत्याएं इसके ताजा उदाहरण हैं। बेहतर कानून व्यवस्था का नारा सिर्फ नारा बनकर रह गया है।

देश में लग सकती है इमरजेंसी : राहुल गांधी

नेता प्रतिपक्ष बोले- मोदी 1 साल के भीतर छोड़ेंगे पीएम का पद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने दावा कर दिया जिसने सियासत में भूचाल ला दिया। उन्होंने कहा चीजों को नियंत्रित करने का सिस्टम अब ध्वस्त हो रहा है और उनका अंदाजा है कि एक साल के भीतर नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री के पद पर नहीं रहेंगे।

उन्होंने पार्टी के आदिवासी प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में यह दावा भी किया कि अब सरकार के भीतर से ही संस्थागत विद्रोह शुरू हो रहा है और बहुत बड़ी आर्थिक सुनामी आने वाली है। उन्होंने

कहा कि देश में लोगों के विरोध से इमरजेंसी भी लग सकती है। उन्होंने दावा किया कि एक तरफ भयंकर आर्थिक सुनामी आने वाली है और दूसरी तरफ 'सिस्टम' के भीतर ही संस्थागत विद्रोह हो रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि भयंकर आर्थिक सुनामी आने वाली है क्योंकि इस सरकार ने अर्थव्यवस्था को सुरक्षित करने वाले कवच को ही हटा दिया है...इतनी भयंकर आर्थिक सुनामी आने वाली है कि आप लोगों ने अपनी जिंदगी में नहीं देखा होगा। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने दावा किया कि आप सोच रहे हैं कि निर्वाचन आयोग तो पूरी तरह नियंत्रित है। तीन साल पहले नियंत्रित था। अब मुझे मुख्य चुनाव आयुक्त के संदेश आ रहे हैं, खुफिया सिस्टम के प्रमुख और उच्च न्यायपालिका के लोगों की तरफ से विद्रोह हो रहा है, मुझे संदेश आ रहे हैं।

खान सर विवाद के बीच वारदात!

दुनिया को शिक्षा देने वाले देश में विद्या के सेवकों पर आघात

- क्या टाइमिंग सिर्फ संयोग है या कुछ और?
- मुसीबत में शिक्षक, अटैक के बाद कोचिंग बंद गुस्से में छात्र
- टीवी एंकर अंजना ओम कश्यप के साथ चल रहे विवाद के चलते सुर्खियों में बने थे खान सर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूरी दुनिया में शिक्षा देने भारत में अब शिक्षकों पर आघात देना आम बात हो गई है। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने वाले खान सर पर की कोचिंग पर एक बार फिर अटैक हुआ है। इस बार 10 से 12 राउंड गोलियां चली हैं, इससे पहले कोचिंग पर देसी बमों के साथ अटैक किया गया था जिसमें वह बाल-बाल बच गये थे। कोचिंग पर अटैक की टाइमिंग को देखते हुए बड़े सवाल उठने लगे है कि क्या यह अटैक सोची समझी साजिश के तहत किया गया है? क्योंकि हाल फिलहाल खान सर शिक्षा ही नहीं बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी बड़े बयान जारी करने लगे थे। ताजा विवाद टीवी एंकर अंजना ओम कश्यप से भी चल रहा है जो बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

बाहरहाल यह तो पुलिस जांच के बाद पता चल जाएगा कि हमले के असली कारण क्या हो सकते हैं लेकिन बिहार के साथ पूरी देश की सोशल मीडिया पर अटैक के बाद बमचक मच गयी है। सड़कों पर छात्र खान सर के समर्थन में धरना प्रर्दशन कर रहे हैं और सोशल मीडिया पर उनके समर्थन की आंधी चल रही हैं। क्या एक शिक्षक इतना बड़ा हो सकता है कि उसके उपर गोलियां चलने लगें? क्या एक ऐसा व्यक्ति जो लाखों छात्रों को कम फीस में पढ़ाता हो जिसकी क्लासरूम से ज्यादा पहुंच मोबाइल स्क्रीन तक हो जिसकी बातों को छात्र सिर्फ सुनते नहीं बल्कि मानते भी हों वह कुछ लोगों की आंखों में इतना खटक सकता है कि उसे डराने की कोशिश की जाए? यही सवाल आज देश की सियासत समाज और शिक्षा व्यवस्था के सामने खड़ा है।

फायरिंग के बाद बढ़ाई गई पुलिस सुरक्षा

खान सर की कोचिंग सेंटर के बाहर फायरिंग की घटना के बाद सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। घटना के बाद बड़ी संख्या में पुलिस बल को तैनात किया गया है और पूरे क्षेत्र में गश्त बढ़ा दी गई है।

जानकारी के अनुसार 2 जून की रात को मुसल्लहपुर थाना क्षेत्र में स्थित कोचिंग सेंटर के पास फायरिंग की घटना हुई जिसमें गार्ड के साथ मारपीट भी की गई। इस घटना के बाद स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई और मौके पर पुलिस पहुंचकर जांच में जुट गई। घटना के बाद खान सर ने कहा कि कुछ असामाजिक तत्वों ने कोचिंग सेंटर के गार्ड के साथ मारपीट की, जिसके कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। उन्होंने कहा कि संस्था में कम फीस पर शिक्षा देने को लेकर कुछ लोग नाराज हैं और इसी कारण इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हम हमेशा बच्चों की भलाई के लिए काम करते हैं लेकिन कुछ असभ्य लोग यहां आए और हमारे स्टाफ के साथ मारपीट की। घटना के बाद पुलिस ने सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत कर दिया है। अधिकारियों के अनुसार, मामले की जांच की जा रही है और आसपास लगे सीसीटीवी की फुटेज खंगाली जा रही है ताकि आरोपियों की पहचान की जा सके। गौरतलब है कि यह पहली बार नहीं है जब खान सर के संस्थान के आसपास किसी आपराधिक घटना की चर्चा हुई हो। इससे पहले 10 मई 2019 को उनके कोचिंग सेंटर को निशाना बनाकर देसी बम से हमला किया गया था। उस समय सुबह करीब 10 बजे कदमकुआं थाना क्षेत्र के मुसल्लहपुर हाट स्थित खान जीएस रिसर्च सेंटर के बाहर अज्ञात बदमाशों ने लगातार दो देसी बम फेंके थे। उस हमले में कोचिंग संस्थान के कार्यालय के एक हिस्से को नुकसान पहुंचा था, हालांकि उस घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं थी।

खान सर... करोड़ों की पसंद

एक ऐसा नाम जो किसी सरकारी पद पर नहीं है किसी राजनीतिक दल का नेता नहीं है कोई उद्योगपति नहीं है लेकिन उसके बावजूद करोड़ों लोगों तक उसकी पहुंच है। वह पढ़ाते हैं समझाते हैं हंसाते हैं और कई बार ऐसे मुद्दों पर भी बोल जाते हैं जिन पर बड़े-बड़े नेता बोलने से पहले दस बार सोचते हैं। ऐसे व्यक्ति की कोचिंग पर 10 राउंड से ज्यादा गोलियां चलना आम बात नहीं हो सकती जानकारों का मानना है कि ताजा मामला सिर्फ एक आपराधिक घटना नहीं है। क्योंकि यहां सवाल यह है कि आखिर निशाने पर कौन था? एक कोचिंग संस्थान? एक शिक्षक? या फिर वह प्रभाव, जो लाखों युवाओं के बीच लगातार बढ़ रहा है?

दिलचस्प बात यह है कि यह पूरा घटनाक्रम ऐसे समय सामने आया है जब खान सर और एक चर्चित टीवी एंकर के बीच चला विवाद सोशल मीडिया पर लगातार चर्चा का विषय बना हुआ था। बहस तेज हो रही थी समर्थक और विरोधी आमने-सामने थे और तभी अचानक गोलियों की खबर सामने आती है। यहीं से सवाल और गहरे हो जाते हैं।

अब सच बोलने सवाल पूछने या लोकप्रिय होने की कीमत गोलियों के साए में जीना

क्या यह महज एक आपराधिक वारदात है? क्या यह किसी स्थानीय रंजिश का परिणाम है? क्या यह डराने का प्रयास है? या फिर यह सिर्फ एक ट्रेलर था जिसके जरिए किसी प्रतिक्रिया को परखा जा रहा था? इन सवालों के जवाब जांच एजेंसियों को देने हैं। लेकिन एक बात साफ है कि जब किसी ऐसे व्यक्ति पर हमला होने की खबर आती है जिसकी बात लाखों युवा सुनते हों तो मामला सिर्फ कानून-व्यवस्था तक सीमित नहीं रहता। यह उस भरोसे का सवाल बन जाता है जिसे छात्र अपने शिक्षक में देखते हैं। यह उस माहौल का सवाल बन जाता है जिसमें विचार रखने वाले लोग खुद को सुरक्षित महसूस करें। और सबसे बड़ा सवाल यह कि अगर सच बोलने सवाल पूछने या लोकप्रिय होने की कीमत गोलियों के साए में जीना है तो फिर लोकतंत्र की असली परीक्षा यहीं से शुरू होती है।

टाइमिंग पर उठते सवाल?

राजनीति में कहा जाता है कि टाइमिंग कभी सामान्य नहीं होती। इसी सिद्धांत के सवाल उठना शुरू हो गये हैं कि जिस समय खान सर और चर्चित टीवी एंकर अंजना ओम कश्यप के बीच जुड़ा विवाद सोशल मीडिया पर तेजी से फैल रहा था उसी दौरान हमले की खबर सामने आना क्या सिर्फ संयोग है? खान सर के समर्थन और विरोध में सोशल मीडिया दो खेमों में बंटा दिखाई दे रहा था। वीडियो वायरल हो रहे थे बहस तेज थी और लाखों लोग इस विवाद को फॉलो कर रहे थे। ऐसे माहौल में यदि किसी प्रकार का हमला या फायरिंग होती है तो स्वाभाविक रूप से सवाल उठते हैं। क्या किसी ने बढ़ते प्रभाव को संदेश देने की कोशिश की? क्या यह केवल अपराध था? या फिर यह वह घटना है जिसका असर वास्तविक नुकसान से ज्यादा मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने में होता है? जांच पूरी होने तक इन सवालों का जवाब नहीं मिलेगा। लेकिन इतना तय है कि इस घटना ने विवाद को शांत करने के बजाय और अधिक चर्चा का विषय बना दिया है। अब सबकी नजर इस बात पर है कि जांच क्या कहती है और कानून आखिर किस निष्कर्ष तक पहुंचता है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

निषेध दिवस मनाने से नहीं रूकेगा तंबाकू का दमघोटू असर

हमारे देश में हर वर्ष लगभग 13 लाख 50 हजार से अधिक लोगों की मृत्यु केवल तंबाकू और धूम्रपान के कारण होती है। इसका अर्थ है कि प्रतिदिन लगभग 3,500 भारतीय इस धीमे जहर के कारण अपनी जान गंवा रहे हैं। हर वर्ष 31 मई का दिन एक गंभीर चेतावनी और नई उम्मीद लेकर आता है- विश्व तंबाकू निषेध दिवस।

रविवार को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया गया। ये भारत में एक और दिन की तरह गुजर जाएगा। कुछ सरकारी कार्यक्रमों के आयोजन के बाद लोग भूल जाएंगे। जबकि तंबाकू के नुकसान सबको मालूम है। भारत, जो दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तंबाकू उत्पादक और उपभोक्ता देश है, वहां स्थिति और भी भयावह है। हमारे देश में हर वर्ष लगभग 13 लाख 50 हजार से अधिक लोगों की मृत्यु केवल तंबाकू और धूम्रपान के कारण होती है। इसका अर्थ है कि प्रतिदिन लगभग 3,500 भारतीय इस धीमे जहर के कारण अपनी जान गंवा रहे हैं। हर वर्ष 31 मई का दिन एक गंभीर चेतावनी और नई उम्मीद लेकर आता है- विश्व तंबाकू निषेध दिवस। वर्ष 1987 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा आरम्भ किए गए इस अभियान का मुख्य उद्देश्य उस खामोश महामारी की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित करना है, जो प्रतिदिन हजारों जिंदगियों को निगल रही है।

वर्ष 26 में इस दिवस की थीम अत्यंत प्रासंगिक और विचारोत्तेजक रखी गई है- तंबाकू और निकोटीन की लत के आकर्षण को बेनकाब करना।'यह थीम उस झूठे आवरण को हटाने का आह्वान करती है, जिसे तंबाकू उद्योग ने अपने जहरीले उत्पादों को आकर्षक दिखाने के लिए तैयार किया है। आज तंबाकू और निकोटीन उत्पादों को ग्लैमर, आधुनिकता और तनावमुक्ति के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जबकि वास्तविकता में यह मौत के सुनियोजित व्यापार का मुखौटा मात्र है। तंबाकू के इस छलावे को समझना आज के युवाओं के लिए सबसे अधिक आवश्यक है। ग्लोबल एडल्ट टोबेको सर्वे के आंकड़े एक बेहद चिंताजनक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। भारत में तंबाकू सेवन शुरू करने की औसत आयु मात्र 18.7 वर्ष रह गई है। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि 18 वर्ष से कम आयु के किशोरों, विशेषकर लड़कियों में सिगरेट और ई-सिगरेट का सेवन तेजी से बढ़ रहा है। तंबाकू कंपनियां नए-नए स्वादों, आकर्षक पैकेजिंग और भ्रामक विज्ञापनों के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपने जाल में फंसा रही हैं। निकोटिन की लत इतनी चुपचाप मस्तिष्क पर कब्जा कर लेती है कि जब तक व्यक्ति इस 'आकर्षण' की सच्चाई समझ पाता है, तब तक वह बीमारी और निर्भरता के दलदल में गहराई तक धंस चुका होता है। यही कारण है कि वर्ष 26 की यह थीम सीधे तौर पर इस कृत्रिम आकर्षण को उजागर करने पर बल देती है, ताकि युवा पीढ़ी तंबाकू को उसकी वास्तविकता में पहचान सके। आंकड़े स्पष्ट रूप से बताते हैं कि विश्व स्तर पर प्रतिवर्ष लगभग 80 लाख लोग तंबाकू सेवन के कारण अकाल मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। भारत, जो दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तंबाकू उत्पादक और उपभोक्ता देश है, वहां स्थिति और भी भयावह है। अब सरकारे ही नहीं आम जन को भी आंदालेन की तरह इसके खिलाफ सड़क पर उतरना होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

ऊर्जा जरूरतों में आत्मनिर्भरता से थमेगी महंगाई

सुरेश सेठ

स्वतंत्रता के बाद ऐसा कोई दौर नहीं आया जब देश में चीजें व्यापक रूप से सस्ती हुई हों। महंगाई की समस्या मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग के जीवन में लगातार बनी रही है। इसका एक प्रमुख कारण हमारी आयात-निर्भर अर्थव्यवस्था है। आयातों का भुगतान डॉलर में करने तथा बजट घाटे के दबाव के कारण आयातित वस्तुएं महंगी हो जाती हैं, जिससे बाजार में मुद्रास्फीति बढ़ती है। साथ ही, कच्चे माल का आयात भी महंगा पड़ता है, जिसके कारण उससे निर्मित तैयार उत्पादों की लागत और कीमत दोनों बढ़ जाती हैं। देश का आम आदमी लंबे समय से महंगाई की मार झेलता आया है, जबकि सरकारें समय-समय पर उस पर नियंत्रण का आश्वासन देती रही हैं। कोविड-19 के बाद महंगाई नियंत्रित करने के लिए रिजर्व बैंक ने कठोर साख नीति अपनाई, जिससे ऋण महंगे हो गए और निवेश तथा आर्थिक विकास प्रभावित होने लगे।

बाद में आधिकारिक आंकड़ों में थोक महंगाई दर शून्य से नीचे तथा खुदरा महंगाई दर सुरक्षित सीमा के भीतर दिखाई गई, किंतु आम जनता को बाजार में वस्तुएं वास्तव में सस्ती नहीं मिलीं। इसका एक कारण यह भी रहा कि लागत में आई कमी का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंचने के बजाय कई बार बिचौलियों और फुटकर व्यापारियों के अतिरिक्त लाभ में बदल गया। देश महंगाई पर नियंत्रण और आर्थिक स्थिरता से राहत की उम्मीद कर ही रहा था। रेपो दरों में कटौती का दौर भी थम गया था और अपेक्षा की जा रही थी कि घरेलू तथा विदेशी निवेश बढ़ेगा तथा शेयर बाजार नई ऊंचाइयों को छुएगा। किंतु अचानक एक युद्ध ने ऊर्जा आपूर्ति व्यवस्था को प्रभावित कर दिया। अमेरिका-इस्राइल और ईरान के बीच संघर्ष के कारण ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख मार्ग, होर्मुज जलडमरूमध्य, बाधित हो गया। इसके परिणामस्वरूप कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस और उर्वरकों की आपूर्ति पर गहरा असर पड़ा, जिससे भारत में महंगाई बढ़ने की आशंकाएं फिर से प्रबल हो गईं और आम जनता की चिंताएं बढ़ने लगीं।

वर्तमान स्थिति यह है कि देश में आर्थिक गतिविधियों की रीढ़ माने जाने वाले पेट्रोल और डीजल के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। कुछ ही दिनों में मूल्य कई बार बढ़ाए गये हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें अपेक्षाकृत नियंत्रित रहने के बावजूद देश में पेट्रोल की कीमतें 100 रुपये प्रति लीटर से ऊपर पहुंच गई हैं। इस निरंतर वृद्धि से

पेट्रोल-डीजल आम उपभोक्ता के लिए बेहद महंगा हो रहा है। यद्यपि सरकार आश्वासन देती रही है कि देश के पास लगभग 75 दिनों का पर्याप्त ईंधन भंडार उपलब्ध है, जिससे आपूर्ति बाधित नहीं होगी और पेट्रोल पंपों पर सामान्य स्थिति बनी रहेगी, फिर भी कीमतों में बढ़ोतरी जारी है। सरकार का तर्क है कि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने के दौरान घरेलू बाजार में पेट्रोल व डीजल के दाम लंबे समय तक स्थिर रखे गए, जिससे पेट्रोलियम कंपनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। इसी घाटे की भरपाई के लिए ईंधन कीमतों को बाजार के अनुसार समायोजित किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप लगभग हर दूसरे या तीसरे दिन दामों में वृद्धि देखने को मिल रही है। पेट्रोल की कीमतों में लगातार वृद्धि से आम जनता पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ा है। वहीं, व्यावसायिक गैस सिलेंडरों की कीमतों में भारी बढ़ोतरी ने होटल, ढाबों और खाद्य व्यवसायों की लागत बढ़ा दी है। परिणामस्वरूप भोजन और अन्य खाद्य पदार्थों के दाम भी बढ़ गए हैं, जिससे उपभोक्ताओं की क्रय-शक्ति प्रभावित हुई है और खाद्य बाजार में मंदी का माहौल बन गया है। उधर, वित्त मंत्री के अनुसार उर्वरकों की बढ़ती कीमतें और रुपये के अवमूल्यन ने आयात लागत को और बढ़ा दिया है। सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर उत्पाद शुल्क घटाकर राजस्व का नुकसान उठाया है, किंतु ऊर्जा आयात पर निर्भरता और वैश्विक आपूर्ति बाधाओं के कारण स्थिति चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। बैंकों को कारोबार-अनुकूल ऋण विकल्प विकसित करने के निर्देश दिए गए हैं, परंतु ईंधन के वैकल्पिक स्रोत के रूप में विकसित सीएनजी भी महंगी होती जा रही है, जिससे परिवहन लागत बढ़ रही है। विपक्ष इसे आम जनता पर आर्थिक बोझ बताता है, जबकि सरकार का तर्क है कि इसके पीछे अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां और ऊर्जा आपूर्ति संकट जैसे कारण हैं, जो उसके प्रत्यक्ष नियंत्रण से बाहर हैं।

बढ़ती महंगाई से निपटने का स्थायी समाधान देश को अधिक आत्मनिर्भर बनाना है। वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था काफी हद तक आयातों पर निर्भर है, इसलिए वैश्विक संकटों और युद्धों का सीधा प्रभाव महंगाई के रूप में देश को झेलना पड़ता है। यदि अर्थव्यवस्था को निर्यातोन्मुख बनाया जाता और लघु एवं कुटीर उद्योगों को व्यापक स्तर पर विकसित कर उनके निर्यात में हिस्सेदारी बढ़ाई जाती, तो विदेशी निर्भरता कम हो सकती थी।

एक रेशमी आवाज का यूं खामोश होना

राजेंद्र शर्मा

अप्रैल के पहले पखवाड़े से ही संगीत की दुनिया पर काल के क्रूर पंजे दुखदायी बने हुए हैं। 12 अप्रैल को पार्श्व गायिका आशा भोसले, 14 अप्रैल को हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका विदुषी नीला भागवत, 14 मई को तबला वादक साबिर खान के आकस्मिक निधन से गहराए दुख से अभी उबर भी नहीं पाए थे कि 31 मई की शाम 89 वर्षीय पार्श्व गायिका सुमन कल्याणपुर इस फानी दुनिया से रुखसत हो गईं। पार्श्व गायिका के रूप में सुमन कल्याणपुर ने अपने लंबे करिअर में 740 से अधिक फिल्मी और गैर-फिल्मी गीतों को अपनी सुरीली आवाज दी। हिंदी के अलावा उन्होंने मराठी, बंगाली, गुजराती, भोजपुरी, पंजाबी, असमिया, कन्नड़ आदि अन्य भाषाओं में भी गाया।

मोहम्मद रफी के साथ 140 से अधिक युगल गीत गाने का भी उनका रिकॉर्ड है। वर्ष 2023 में उनके योगदान के लिए उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। लेकिन सुमन कल्याणपुर के मामले में यह सवाल ही बेमानी हो जाता है। दरअसल, नियति ने उनके जीवन में ऐसा खेल खेला कि जिस सम्मान की वह हकदार थीं, वह उन्हें मिला ही नहीं। 28 जनवरी, 1937 को कलकत्ता में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यरत शंकर राव हेमाडी की पुत्री के रूप में जन्मी सुमन कल्याणपुर छह वर्ष की उम्र में पिता का ट्रांसफर होने के कारण मुंबई आ गई थीं। बचपन से ही शांत और मर्यादित सुमन कला प्रेमी थीं। चित्रकला में गहरी रुचि के चलते सुमन ने जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला भी लिया। एकाएक सुमन संगीत की ओर आकर्षित हुईं और केशवराव भोले से संगीत सीखना शुरू किया तथा उस्ताद खान अब्दुल रहमान खान व गुरुजी मास्टर नवरंग से संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। साल 1952 में सुमन को ऑल इंडिया रेडियो पर गाने का अवसर मिला। सुरीली, संयत आवाज की धनी सुमन को अभिनेता व फिल्ममेकर शेख मुख्तार ने रेडियो पर सुना तो शुक्राची चांदनी नामक मराठी फिल्म में गाने का मौका दिया।

शुक्राची चांदनी के बाद शेख मुख्तार ने हिंदी फिल्म मंगू में भी सुमन को मौका दिया। इस फिल्म के लिए सुमन कल्याणपुर की आवाज में तीन गाने रिकॉर्ड किए गए थे, लेकिन एक विवाद के चलते संगीतकार मोहम्मद शफी उस फिल्म से हट गए और ओ.पी. नय्यर को मंगू का संगीत तैयार करने की जिम्मेदारी मिली, तो सुमन कल्याणपुर की गाई सिर्फ एक लोरी ही उस फिल्म में बची। वर्ष 1954 में गुरुदत्त ने अपनी फिल्म आर-पार में मौका दिया, किन्तु नियति का खेल यह रहा कि आर-पार के गीत 'मोहब्बत कर लो जी भर लो, अजी किसने रोका है' में संगीतकार ओ.पी. नय्यर ने इक्का-दुक्का लाइनें ही सुमन से गवाईं, बाकी यह गीत रफी साहब व गीता दत्त से गवाया गया। इस पूरे गाने में वह बस एक कोरस गायिका ही बनकर रह गईं। वर्ष 1958 में मुंबई के एक बिजनेसमैन रामानंद कल्याणपुर से विवाह के बाद सुमन हेमाडी से सुमन कल्याणपुर बनीं। 1964 में नियति ने फिर खेल खेला। जिसे स्वयं सुमन कल्याणपुर ने अपने एक इंटरव्यू में बयां किया था।

किस्सा यह है कि 1964 में मशहूर देशभक्ति गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' को गाने के लिए सुमन कल्याणपुर का चयन हुआ। सुमन कल्याणपुर ने इस गीत और मौके की महत्ता को समझते हुए गाने की तैयारी भी कर ली। यहां तक कि प्रधानमंत्री नेहरू के सामने इसकी रिहर्सल भी हुई, लेकिन ऐन वक्त पर यह गीत लता मंगेशकर को दे दिया गया। इसी बीच लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी के बीच रॉयल्टी विवाद के चलते साठ का दशक सुमन कल्याणपुर के लिए खूबसूरत समय बनकर आया। 'आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे', 'ना ना करते प्यार तुम ही से', 'तुमने पुकारा और हम चले आए', 'परबतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा है', 'दिल ने फिर याद किया', 'तुझको दिलबरी की कसम', 'चांद तकता है इधर' जैसे सैकड़ों सदाबहार गीत सुमन कल्याणपुर की झोली में आ गिरे। सुमन कल्याणपुर की आवाज लता मंगेशकर के काफी करीब थी, लेकिन उनकी आवाज की अपनी एक अलग रवानगी और खनक थी। फिर भी उनके गाए गीतों को सुनते ही अक्सर लोग मान लेते हैं कि यह तो लता गा रही हैं। उन्हें अक्सर 'द अदर लता' या 'दूसरी लता' कहा जाने लगा। यह दंश सुमन कल्याणपुर ने पूरे जीवन सहा। उधर लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी के बीच रॉयल्टी का विवाद समाप्त हुआ तो सुमन कल्याणपुर को काम मिलना कम होता गया।

वर्ष 1981 में आई 'नसीब' फिल्म का गीत 'जिंदगी इम्तिहान लेती है' सुमन कल्याणपुर का आखिरी फिल्मी गीत साबित हुआ। 'नसीब' फिल्म के बाद सुमन कल्याणपुर को गाने के मौके मिले। लेकिन कभी ऐसा हुआ कि वे फिल्में ही रिलीज नहीं हुईं। यह भी हुआ कि सुमन जी की आवाज हटाकर किसी दूसरी गायिका से वे गाने गवा लिए गए। वर्ष 2008 में सुमन कल्याणपुर के पति रामानंद कल्याणपुर के निधन के बाद सुमन कल्याणपुर ने सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल होना लगभग बंद कर दिया था। पार्श्वगायन के अपने 28 साल के करिअर में सुमन कल्याणपुर ने एक से एक बेशकीमती, सदाबहार गाने गाकर एक सम्मानजनक स्थान बनाया। स्वर साधना व स्वर सिद्धि के आकाश में वे ऊंचाई पर थीं। लेकिन प्रतिस्पर्धा और राजनीति से भरी हुई फिल्मी दुनिया में 'द अदर लता' या 'दूसरी लता' कहलाने से वह आहत जरूर थीं। उनकी मधुर, रेशमी और शहद-सी मीठी आवाज सदैव उनकी याद दिलाती रहेगी।

घर पर लीची से बनाएं स्वादिष्ट आइसक्रीम

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे गर्मी के मौसम में आइसक्रीम खाना पसंद नहीं होगा। बच्चे से लेकर बड़े तक इस मौसम में आइसक्रीम खाकर गर्मी दूर करते हैं। वैसे तो आपको बाजार में हर फ्लेवर की आइसक्रीम मिल जाती है, लेकिन बाजार की ज्यादा आइसक्रीम खाने से तबियत खराब होने का डर रहता है। ऐसे में आप चाहें तो घर पर ही स्वादिष्ट आइसक्रीम बनाकर अपने परिवारवालों को परोस सकती हैं। इस मौसम में वैसे भी लीची खाना काफी फायदेमंद होता है। लीची शरीर को ठंडक पहुंचाने का काम करती है। यही वजह है कि अगर आप घर पर लीची की आइसक्रीम बनाएंगे तो इसे हर कोई बड़े ही चाव से खाएगा। इसके साथ ही इसे खाने के बाद परिवार वाले आपकी तारीफ करते नहीं थकेंगे।

सामान

2 कप ताजा लीची, 1 कप कंडेंस्ड मिल्क, 1 कप फुल क्रीम दूध, 1 कप हैवी क्रीम, 1/2 कप चीनी, 1 टीस्पून वनीला एसेंस।

विधि

लीची की आइसक्रीम बनाने के लिए सबसे पहले लीची की प्यूरी बनाएं। इसके लिए लीची को धोकर उसका छिलका और बीज निकालें। इसके बाद लीची के गूदे को मिक्सर ग्राइंडर में डालकर प्यूरी बना लें। ध्यान रखें कि इसमें लीची के थोड़े टुकड़े रहने चाहिए। अगर प्यूरी में कुछ टुकड़े रह जाएंगे तो इससे आइसक्रीम में अच्छा टेक्सचर आएगा। प्यूरी बनाने के बाद एक बड़े कटोरे में कंडेंस्ड मिल्क, फुल क्रीम दूध, और चीनी मिलाएं। इसके बाद इस कटोरे में लीची की प्यूरी डालकर अच्छी तरह मिलाएं। इसके बाद इसमें फेंटी हुई क्रीम को धीरे-धीरे मिलाते हुए लीची के मिश्रण में डालें। क्रीम मिलाते वक्त इसे फेंटे नहीं, बस हल्के हाथ से मिक्स करें। आखिर में इस मिश्रण में वनीला एसेंस डालें और अच्छी तरह से मिक्स करें। इससे आइसक्रीम में अच्छा स्वाद आएगा। अब इस मिश्रण को आइसक्रीम बनाने के सांचे में डालें और कम से कम 6-8 घंटे या पूरी रात के लिए जमने दें। जब ये आइसक्रीम जम जाए तो इसके ऊपर लीची का गूदा डालकर इसे परोसें। लीची की ये आइसक्रीम खाने में काफी स्वादिष्ट लगेगी।

घर पर तैयार करें ठंडी मैंगो लस्सी

भीषण गर्मी पड़ रही है। ऐसे में लोग हैवी भोजन करने की जगह हल्की चीजों का सेवन करना पसंद कर रहे हैं। खाने से ज्यादातर लोग ठंडे पेय पदार्थों का सेवन ज्यादा कर रहे हैं, ताकि उनकी सेहत भी दुरुस्त रहे और मन भी खुश रहे। गर्मी के इस मौसम में डॉक्टर्स भी लोगों को तरल पदार्थ पीने की सलाह देते हैं। इन पेय पदार्थों में मैंगो शेक भी शामिल है। आम खाने के साथ-साथ लोगों को इसका शेक भी काफी पसंद आता है। ये काफी आसानी से बन जाता है और साथ ही में पीने में भी काफी स्वादिष्ट लगता है। अगर मैंगो शेक पीकर बोर हो गए हैं तो इस बार मैंगो लस्सी बनाकर कुछ अलग ट्राई कर सकते हैं। मैंगो लस्सी पीने में काफी स्वादिष्ट लगती है। लस्सी होने की वजह से शरीर को काफी ठंडक पहुंचाती है। गर्मी के मौसम में दही के बने पेय पदार्थ काफी सही रहते हैं।

सामान

1 पका हुआ आम, 1 कप गाढ़ा दही, 1/2 कप दूध, 2-3 टेबलस्पून चीनी, 1/4 टीस्पून इलायची पाउडर, बर्फ के टुकड़े, कटे हुए मेवे (काजू, बादाम, पिस्ता)।

विधि

मैंगो लस्सी बनाने के लिए सबसे पहले आम के टुकड़ों को ब्लेंडर में डालकर अच्छी तरह से पीस लें ताकि एक स्मूद प्यूरी बन जाए। इसके बाद इसी ब्लेंडर में दही, दूध, चीनी और इलायची पाउडर डालें। सभी सामग्री को अच्छी तरह से तब तक ब्लेंड करें, जब तक मिश्रण स्मूद और क्रीमी न हो जाए। ध्यान रखें कि इसमें चीनी कम नहीं होनी चाहिए। फीकी मैंगो लस्सी पीने में काफी अजीब लगती है। जब स्वाद चख लें तो उसके बाद ब्लेंडर को बंद करें। अब इसे थोड़ी देर के लिए फ्रिज में रख दें। लस्सी अगर तुरंत परोसनी है तो आइस क्यूब के साथ मैंगो लस्सी को एक बार ब्लैंड कर दें, ताकि ये ठंडी हो जाए। इसके बाद एक कांच के गिलास में मैंगो लस्सी निकालें। अब मैंगो लस्सी को सजाने के लिए उसके ऊपर कटे हुए मेवे डालें। ठंडी-ठंडी मैंगो लस्सी आपके शरीर को राहत पहुंचाएगी।

हंसना मना है

अपना बच्चा रोये तो दिल में दर्द होता है, और दुसरे का रोये तो सिर में। अपनी बीवी रोये तो सिर में दर्द होता है, और दुसरे की रोये तो दिल में।

पूरी शराब की बोतल ही गटक ली आज उसने। बीवी ने तो सिर्फ इतना ही कहा था आज 'PK' दिखा दो।

जितना गौर से लोग टकराने के बाद एक दूसरे को देखते है, उतनी गौर से अगर पहले ही देख लें, तो टक्कर ही नहीं होती।

एक मास्टर जी के घर में 7-8 मास्टर मेहमान आ गए, मास्टर जी की बीवी बोली, घर में चीनी नहीं है, चाय कैसे बनाऊं? मास्टर ने कहा, तुम सिर्फ चाय बनाकर ले आओ, बाकी मै सम्भाल लूंगा। बीवी चाय बनाकर ले आई। मास्टरजी ने कहा, जिस के हिस्से में फिकी चाय आएगी, कल हम सब उनके घर मेहमान बनकर खाने के लिए आएंगे, सभी मास्टरों ने खुशी से चाय पी ली। एक ने तो यहां तक कह दिया, मेरी चाय में तो इतनी चीनी है। कि डर है कहीं डायबिटीज ना हो जाए!!

कहानी | बिना श्रद्धा और विश्वास के गंगा स्नान

एक समय शिवजी पार्वती के साथ हरिद्वार में घूम रहे थे। पार्वती जी ने देखा कि सहस्त्रों मनुष्य गंगा में नहा-नहाकर हर-हर गंगे कहते चले जा रहे हैं परंतु सभी दुखी और पाप परायण हैं। पार्वती ने पूछा कि गंगा में इतनी बार स्नान करने पर भी इनके पाप और दुखों का नाश क्यों नहीं हुआ? क्या गंगा में सामर्थ्य नहीं रही? शिवजी ने कहा, इन लोगों ने पापनाशिनी गंगा में स्नान ही नहीं किया है, पार्वती ने कहा कि सभी तो नहा कर आ रहे हैं? शिवजी ने कहा, ये केवल जल में डुबकी लगाकर आ रहे हैं। दूसरे दिन बड़े जोर की बरसात होने लगी। एक चौड़े रास्ते में एक गहरा गड्ढा था, शिवजी ने वृद्ध रूप धारण कर गड्ढे में जाकर ऐसे पड़ गए, जैसे कोई मनुष्य चलता-चलता गड्ढे में गिर पड़ा हो और पार्वती से बोले तुम लोगों को पुकारती रहो कि मेरे वृद्ध पति अकस्मात गड्ढे में गिर पड़े हैं कोई पुण्यात्मा इन्हें निकालकर इनके प्राण बचाए। शिवजी ने यह भी कहा कि जब कोई मुझे निकालने को तैयार हो तब इतना और कह देना कि मेरे पति सर्वथा निष्पाप हैं इन्हें वही छुए जो स्वयं निष्पाप हो अन्यथा आप भस्म हो जाएंगे। पार्वती जी गड्ढे के किनारे बैठ कर शिवजी की सिखाई हुई बात कहने लगीं। गंगा में नहाकर लोगों के दल आ रहे हैं। सुंदर युवती को यूं बैठी देख कइयों के मन में पाप आया, कई लोक लज्जा से डरे तो कइयों को कुछ धर्म का भय हुआ, कुछ ने तो पार्वती जी को सुना दिया कि मरने दे बुड्ढे को क्यों उसके लिए रोती है? कुछ दयालु युवती के पति को निकालना चाहा परंतु पार्वती के वचन सुनकर वे भी रुक गए। उन्होंने सोचा कि हम स्वयं भस्म न हो जाएं। किसी का साहस नहीं हुआ। शिवजी ने कहा, पार्वती! देखा, आया कोई सच्चे ह्रदय से गंगा में नहाने वाला है? फिर एक जवान हर-हर गंगे करता हुआ निकला, युवक शिवजी को निकालने की तैयारी की। उसने पार्वती से कहा कि माता! मेरे निष्पाप होने में तुझे संदेह क्यों होता है? देखती नहीं मैं अभी गंगा नहाकर आया हूं। तेरे पति को निकालता हूं। युवक ने लपककर बूढ़े को ऊपर उठा लिया। शिव-पार्वती ने उसे अधिकारी समझकर अपना असली स्वरूप प्रकट कर उसे दर्शन देकर कृतार्थ किया। शिवजी ने पार्वती से कहा कि इतने लोगों में से इस एक ने ही गंगा स्नान किया है। इसी दृष्टांत के अनुसार जो लोग बिना श्रद्धा और विश्वास के केवल दंभ के लिए गंगा स्नान करते हैं उन्हें वास्तविक फल नहीं मिलता परंतु इसका यह मतलब नहीं कि गंगा स्नान व्यर्थ जाता है। गंगा स्नान का बहुत पुण्य भी है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष धन प्राप्ति सुगम होगी। पराक्रम बढ़ेगा। जीवनसाथी से आर्थिक मतभेद हो सकते हैं। कामकाज में आशानुरूप स्थिति बनेगी। संतान के व्यवहार पर नजर रखें।

वृषभ आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपके व्यवहार एवं कार्यकुशलता से अधिकारी वर्ग से लाभ होगा। आपसी विचार-विमर्श लाभप्रद रहेगा। बुरी खबर मिल सकती है।

मिथुन धनलाभ होगा। प्रसन्नता बनी रहेगी। वाहन सुख मिलेगा। संपत्ति के लेन-देन में सावधानी बरतें। परिवार में सहयोग का वातावरण रहेगा। मेहनत का फल मिलेगा।

कर्क पुराने मित्र-संबंधी मिलेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। कार्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न बाधाओं से मन अशांत रहेगा। विवादों से दूर रहना चाहिए। स्वाभिमान बढ़ेगा।

सिंह अप्रत्याशित लाभ होगा। राजकीय सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। जोखिम बिलकुल न लें। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। पिछले कार्यों को टालें।

कन्या पारिवारिक जीवन अच्छा रहेगा। रुका पैसा मिलेगा। शत्रु आपकी छवि को धूमिल करने का प्रयास करेंगे। अतः सावधान रहें। फालतू खर्च होगा। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

तुला दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। पूंजी निवेश बढ़ेगा। साहित्यिक रुचि बढ़ेगी। आर्थिक योग शुभ हैं। यात्रा से व्यापारिक लाभ हो सकता है। रुका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक नए अनुबंध होंगे। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। निवेश शुभ रहेगा। जल्दबाजी व भागदौड़ से काम करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाएँ। अच्छे मित्र से भेंट होगी।

धनु कार्यसिद्धि होगी। आय-व्यय में संतुलन रहेगा। क्रोध पर संयम आवश्यक है। व्यापार में नए अनुबंध लाभकारी रहेंगे। धर्म में रुचि बढ़ेगी। नई योजना से लाभ होगा।

मकर संतान की ओर से अच्छे समाचार मिलेंगे। दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करें। परिवार की चिंता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें।

कुम्भ लाभ होगा। पिछले कार्यों को टालना चाहिए क्योंकि उसमें असफलता का योग है। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। राजकीय बाधा दूर होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा।

मीन प्रसन्नता रहेगी। संपत्ति के कार्य लाभ देंगे। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। संतान के रोजगार की समस्या का समाधान संभव है।

हालीवुड | रिलीज डेट

पिछले एक दशक से मैंने कई बार ऐक्टिंग छोड़ने के बारे में सोचा है : मनोज वाजपेयी

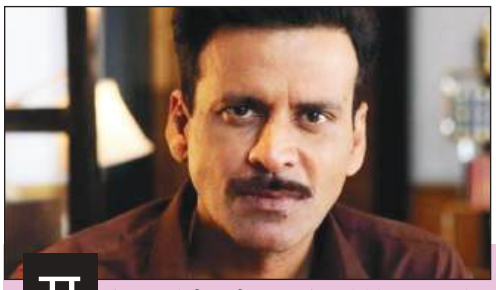

मनोज बाजपेयी बॉलीवुड के मोस्ट टैलेंटेड एक्टर्स में से एक हैं। उन्होंने अपने अब तक के करियर में तमाम शानदार फिल्में दी हैं और अपनी एक्टिंग का लोहा मनवाया है। वहीं मनोज ओटीटी के भी बादशाह हैं। इन सबके बीच हाल ही में एक्टर ने खुलासा किया कि पिछले एक दशक में उन्होंने कई बार एक्टिंग छोड़ने के बारे में सोचा है। उन्होंने कबूल किया कि मुश्किल किरदारों को निभाने का इमोशनल बोझ अक्सर उन पर गहरा असर छोड़ता है। मनोज ने कहा कि एक्टिंग को छोड़ने का ख्याल उनके मन में बार-बार आया है। उन्होंने कहा, यार आपको सच बताऊं, लगभग 10 साल से न बीच-बीच में मन करता है कि मैं छोड़ दूं। लेकिन फिर कभी कोई रोल आ जाता है, हो जाता है। अभिनेता ने इस बात पर जोर दिया कि वह मजबूरी में काम करना जारी नहीं रखना चाहते। उन्होंने कहा, मैं अभिनय को मजबूरी के तौर पर करना नहीं चाहता हूं कि मुझे घर पर दाल रोटी ले जानी है। मुझे एक्टिंग करनी है अगर कोई किरदार है, उसको निभाने में बड़ा मजा आएगा। दिलचस्प बात यह है कि मनोज बाजपेयी ने खुलासा किया कि सालों तक इंटेंस साइकोलॉजिकल डिमांडिंग रोल्स करने के बाद अब वह हल्के-फुल्के, कमर्शियल एंटरटेनिंग फिल्मों की ओर खींच रहे हैं। एक्टर ने कहा, आजकल मेरा बड़ा मन कर रहा है कमर्शियल फिल्में करने का। एकदम स्लैपस्टिक कॉमेडी, बकवास कॉमेडी। थोड़ा गानों-गानों पर नाचो। घर से कोई तैयारी करके नहीं आना है। सिर्फ परिवार को गुडबाय कहो और सेट पर अच्छा टाइम बिताओ। मनोज बाजपेयी ने ये भी कबूल किया कि गली गुलियां, अलीगढ़ और भोंसले जैसी फिल्मों की कुछ डार्कनेस आज भी उनके भीतर मौजूद है। एक्टर ने कहा, कभी-कभी मुझे अपने मानसिक अंधकार का एहसास होता है। कभी-कभी मुझे ठीक-ठीक पता होता है कि यह कहां से आ रहा है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसे किरदार अक्सर मूड स्विंग्स और इमोशनल थकावट का कारण बनते हैं, जिससे स्प्रिचुअलिटी उनकी लाइफ में एक महत्वपूर्ण सहारा बन जाती है।

फिर हरा हो गया 26/11 आतंकी हमले का जख्म

बॉलीवुड | गपशप

कंगना रनौत की 'भारत भाग्य विधाता' का ट्रेलर रिलीज

कंगना रनौत की आगामी फिल्म 'भारत भाग्य विधाता' का ट्रेलर आज जारी हो गया है। यह फिल्म 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के दौरान कामा अस्पताल में घटी सच्ची घटनाओं और वहां की नर्स की बहादुरी और उनकी मेहनत की अनसुनी कहानी को बताती है। यह फिल्म उस रात की कहानी है जब अस्पताल के अंदर फंसे लगभग 400 लोगों की जान बचाने के लिए मेडिकल स्टाफ ने अपनी जान दांव पर लगा दी थी। 2 मिनट 24 सेकंड के इस ट्रेलर की शुरुआत की कामा अस्पताल में और मुंबई में बाकी इलाकों में हुए आतंकी हमले के साथ होती है। इस ट्रेलर में नर्स के जीवन के बारे में दिखाया गया है। समाज में उन्हें किस नजर से देखा जाता है और लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं।

लेकिन फिल्म का प्रमुख केंद्र 2008 में कामा अस्पताल पर हुए आतंकी हमले पर आधारित है। जब आतंकियों ने कामा अस्पताल में घुसकर छह गार्डों की हत्या कर दी थी। मुख्य भवन के पीछे कई गोलियां चलाई गईं, जिससे कई कर्मचारियों घायल भी हुए। इस दौरान वहां की नर्स और सपोर्टिंग स्टाफ ने किस तरह बहादुरी दिखाते हुए लोगों की जान बचाई और अपनी सूजबूझ से आतंकियों का डटकर सामना किया था। फिल्म में कंगना रनौत एक नर्स के किरदार में नजर आई हैं। उनके साथ गिरिजा ओक भी एक नर्स ही बनी हुई हैं। ट्रेलर में कंगना नर्सिंग के दौरान दिलाई गई अपनी शपथ को भी याद करती हैं और लोगों की जान बचाने के लिए अस्पताल के मैनेजमेंट का भी मुकाबला करती नजर आती हैं। मनोज तापड़िया द्वारा लिखित और निर्देशित 'भारत भाग्य विधाता' को कंगना रनौत ने पेन इंडिया के साथ मिलकर प्रोड्यूस भी किया है। फिल्म में कंगना रनौत एकमात्र बड़ा चेहरा हैं। इसके अलावा फिल्म में गिरिजा ओक, स्मिता तांबे, सुहिता थाटे, आशा शेलार, प्रिया बेर्डे, ईशा डे, रसिका अघासे, अमृता नामदेव, आदित्य मिश्रा और जाहिद खान भी अहम किरदारों में नजर आए हैं। यह फिल्म 12 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। बॉक्स ऑफिस पर इसकी टक्कर इम्तियाज अली की 'मैं वापस आऊंगा' से होगी।

एनिमल में इंटीमेट सीन करने के बाद काफी ट्रोल हुई थीं तृप्ति डिमरी

बॉलीवुड | मसाला

तृप्ति डिमरी को 2023 में आई फिल्म एनिमल में दिखी थीं। इस फिल्म में उनका कैमियो रोल था। लेकिन इस फिल्म ने तृप्ति की जिंदगी बदल दी। उन्हें बहुत फेम मिला। हालांकि, इंटिमेट सीन की वजह से उन्हें ट्रोलिंग भी झेलनी पड़ी। अब तृप्ति ने इसे लेकर बात की है।

तृप्ति ने कहा, ये मुश्किल है। कभी-कभी मैं मजबूत दिखने की कोशिश करती हूं। मैं कहती हूं कि नहीं, इसका मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इसे नजरअंदाज कर दूंगी। लेकिन ऐसा नहीं है। कभी न कभी कहीं न कहीं आपको कुछ चुभता है। ये एक फिल्म है जो मैंने की है। मुझे इस पर गर्व है। आगे तृप्ति ने कहा, इस फिल्म में ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर मुझे गर्व न हो। ये एक ऐसा फैसला था जो मैंने अपने लिए लिया था। इसके साथ मैं कम्फर्टेबल थी। मैंने जो भी फिल्म की है मैं उसे लेकर गर्व महसूस करती हूं। चाहे वो 'बुलबुल' हो या 'कला'।

तृप्ति ने आगे कहा कि जब किसी महिला को उसके काम की वजह से जज किया जाता है तो वो फ्रस्ट्रेटेड फील करती हैं। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि ये फेयर नहीं है। हम बहुत जल्दी जज करते हैं और सिर्फ लड़की को।

बता दें कि एनिमल को संदीप रेड्डी वांगा ने बनाया था। फिल्म में रणबीर कपूर और रश्मिका मंदाना लीड रोल में थे। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड ब्रेक कमाई की थी। अब तृप्ति डिमरी को फिल्म मां बहन में देखा जाएगा। इस फिल्म में माधुरी दीक्षित और रवि किशन जैसे स्टार्स हैं। फिल्म को लेकर काफी चर्चा है। ये फिल्म ओटीटी पर रिलीज होगी। फिल्म को आप नेटफ्लिक्स पर देख पाएंगे।

अजब-गजब | ये है दुनिया का सबसे खतरनाक झूला

ये झूला शरीर से अलग कर देती है रूह, कमजोर दिल वालों की नो एंट्री!

आपने मेलों और एडवेंचर पार्क में कई खतरनाक झूले देखे होंगे, लेकिन ब्रिटेन के ब्लैकपूल प्लेजर बीच रिजॉर्ट में हाल ही में खुला नया झूला Aviktas सभी को पीछे छोड़ गया है। इसे दुनिया का सबसे खतरनाक झूला बताया जा रहा है। 138 फीट (करीब 42 मीटर) ऊंचे इस जायरो स्विंग राइड पर चढ़ने के बाद एक लड़की ने अपना अनुभव शेयर किया तो पूरा सोशल मीडिया हैरान रह गया।

लड़की ने बताया, झूला शुरू होते ही ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर और रूह अलग हो गए हों। तेज गति में झूला उलटे-सीधे घूमता है, हवा में लटकता है और फिर तेजी से नीचे की तरफ झपटता है। पूरे समय पैर हवा में लटकते रहते हैं और नीचे कुछ भी नहीं दिखता। लड़की का कहना था कि उस पल डर के मारे उसकी सांस रुक गई थी। ये झूला138 फीट ऊँचा है। इसकी कीमत भी कम नहीं है। बात अगर झूले की लागत की करें तो इसे 8.7 मिलियन (करीब 95 करोड़ रुपये) बताया जा रहा है। ये जायरो स्विंग (Gyro Swing) है। इसकी शुरुआत हाल ही में 21 मई को की गई। यह झूला रिजॉर्ट के सबसे बड़े आकर्षणों में शामिल हो गया है। यहां पहले से ही 'द बिग वन' जैसा फेमस रोलर कोस्टर है, लेकिन Aviktas ने उसे भी पीछे छोड़ दिया है। झूले की संरचना इतनी विशाल है कि दूर से ही नजर आ जाती है।

यह सामान्य झूला नहीं है। इसमें सवार होने वाले व्यक्ति को 360 डिग्री तक घुमाया जाता है। तेज गति, अचानक झटके और खाली हवा में लटकने का अनुभव दिल की धड़कन बढ़ा देता है। डॉक्टर्स की सलाह है कि हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग या कमजोर दिल वाले लोग इस झूले पर बिल्कुल ना चढ़ें। वीडियो वायरल होते ही लोग कमेंट्स में लिख रहे हैं ङ्क ये तो मौत का खेल है, रूह अलग होने वाला अनुभव सुनकर डर लग गया, मैं तो नाम सुनकर ही नहीं चढ़ूंगा, एडवेंचर लवर्स के लिए स्वर्ग। कई थ्रिल सीकर इसे ट्राई करने के लिए ब्लैकपूल पहुंच रहे हैं। ब्लैकपूल ब्रिटेन का प्रसिद्ध सीसाइड रिजॉर्ट है। यहां का प्लेजर बीच दुनिया के सबसे पुराने और पॉपुलर थीम पार्कों में से एक है। Aviktas इस रिजॉर्ट का नया आकर्षण है जो पर्यटकों को और ज्यादा खींच रहा है। राइड पर चढ़ने से पहले पूरी सेफ्टी चेकिंग होती है। मजबूत हार्नेस, सीट बेल्ट और ट्रेंड स्टाफ मौजूद रहता है। फिर भी इतनी ऊंचाई और तेज गति की वजह से यह राइड बेहद थ्रिलिंग है।

दुनिया का सबसे खतरनाक रास्ता, जिसे कहा जाता है हड्डियों की सड़क, बनाने के लिए मार दिए गए थे 10 लाख लोग!

दुनिया में ऐसी कई सड़कें हैं जो अपनी खूबसूरती, लंबाई या खतरनाक रास्तों के लिए मशहूर हैं। कहीं पहाड़ों के बीच घूमती सड़कें लोगों को रोमांच देती हैं, तो कहीं रेगिस्तान और बर्फीले इलाकों से गुजरने वाले रास्ते लोगों को हैरान कर देते हैं। लेकिन क्या आपने कभी ऐसी सड़क के बारे में सुना है, जिसके नीचे हजारों नहीं बल्कि लाखों लोगों की हड्डियां दबी हों? सुनने में यह किसी हॉरर फिल्म की कहानी लगती है, लेकिन यह पूरी तरह सच है। दुनिया में एक ऐसी सड़क मौजूद है जिसे रोड ऑफ बोन्स यानी हड्डियों की सड़क कहा जाता है। इस सड़क का इतिहास इतना दर्दनाक और डरावना है कि इसे जानकर किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाएं। दरअसल, यह रहस्यमयी सड़क रूस के साइबेरिया इलाके में स्थित है। इसका असली नाम कोलयमा हाईवे है। यह लगभग 2,025 किलोमीटर लंबा है, जो रूस के बेहद ठंडे और सुनसान इलाकों से होकर गुजरता है। यहां का मौसम इतना ठंडा होता है कि साल के कई महीनों तक सड़कें मोटी बर्फ से ढकी रहती हैं। तापमान कई बार -50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। इस हाईवे को दुनिया की सबसे डरावनी सड़कों में गिना जाता है। दूर-दूर तक फैली बर्फ, सुनसान रास्ते और डरावना इतिहास इसे और भी रहस्यमयी और खतरनाक बना देते हैं। इस सड़क का निर्माण सोवियत यूनियन के तानाशाह जोसेफ स्टालिन के शासनकाल में शुरू हुआ था। 1930 के दशक में लाखों कैदियों को जबरन मजदूरी के लिए साइबेरिया भेजा गया। इन कैदियों को गुलाग नाम के श्रम शिविरों में रखा जाता था और उनसे बेहद कठिन परिस्थितियों में काम कराया जाता था। कड़ाके की ठंड, भूख, बीमारी और लगातार मेहनत की वजह से हजारों लोग काम करते-करते मर गए। उस समय हालात इतने खराब थे कि मृतकों को अलग से दफनाने का समय भी नहीं मिलता था। कहा जाता है कि मरने वाले लोगों के शवों को सड़क के नीचे ही दबा दिया जाता था। यही वजह है कि इस हाईवे को रोड ऑफ बोन्स कहा जाने लगा, क्योंकि माना जाता है कि यह सड़क लाखों लोगों की हड्डियों के ऊपर बनी हुई है।आज भी इस हाईवे के आसपास कई जगहों पर इंसानी हड्डियां और कंकाल मिलने की बातें समय-समय पर सामने आती रहती हैं। कहा जाता है कि सड़क को मजबूत बनाने के लिए पत्थरों और मिट्टी के साथ इंसानी हड्डियों का भी इस्तेमाल किया गया था।

सवालों के घेरे में आई ओ जनरल

5 महीने पुराने एसी को बताया 12 साल पुराना

» 48 घंटे का अल्टीमेटम वारंटी से बचने के लिए गुमराह करने का आरोप

» उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन का मामला गरमाया

» जनवरी-2026 में खरीदा गयी एसी फिर कंपनी ने उसे 2014 का कैसे बता दिया?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। दुनिया नामीगिरामी एयर कंडीशनर निर्माता कंपनी ओ जनरल एक बड़े विवाद में घिरती नजर आ रही है। देश के प्रतिष्ठित चैनल 4 पीएम के एडिटर-इन-चीफ संजय शर्मा ने कंपनी को कानूनी नोटिस भेजते हुए आरोप लगाया है कि वारंटी अवधि के भीतर खरीदे गए एयर कंडीशनर की सर्विस देने से बचने के लिए कंपनी के प्रतिनिधियों ने भ्रामक और गलत जानकारी दी। कानूनी नोटिस के अनुसार, संजय शर्मा ने 29 जनवरी 2026 को मुंबई स्थित अधिकृत विक्रेता से ओ जनरल एयर कंडीशनर खरीदा था।

कंपनी द्वारा उत्पाद पर 5 वर्ष की वारंटी प्रदान की गई थी। लेकिन मई 2026 में मशीन में तकनीकी खराबी आने के बाद दर्ज कराई गई शिकायतों के बावजूद कोई तकनीशियन निरीक्षण या मरम्मत के लिए नहीं पहुंचा। कानूनी नोटिस में कहा गया है कि यदि वारंटी अवधि में सेवा उपलब्ध नहीं कराई जाती है और उपभोक्ता को गलत जानकारी देकर टालने का प्रयास किया जाता है, तो यह उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के तहत सेवा में कमी और अनुचित व्यापार व्यवहार की श्रेणी में आ सकता है। नोटिस में कंपनी को 48 घंटे के भीतर शिकायत का समाधान करने, एयर कंडीशनर की मरम्मत सुनिश्चित करने तथा कथित लापरवाही पर स्पष्टीकरण देने को कहा गया है। अन्यथा उपभोक्ता मंच, संबंधित सरकारी प्राधिकरणों और सक्षम न्यायिक मंचों के समक्ष मामला उठाने की चेतावनी दी गई है।

4 पीएम एडिटर-इन-चीफ ने भेजा लीगल नोटिस

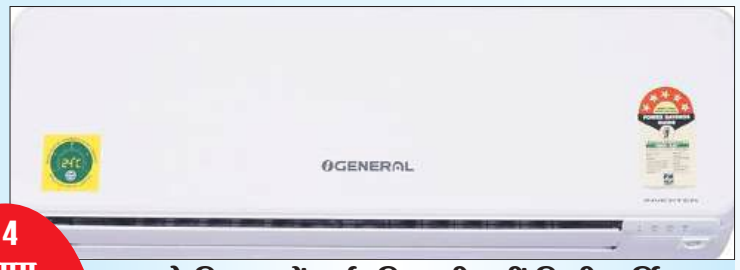

दो शिकायतें दर्ज, फिर भी नहीं मिली सर्विस

नोटिस में दावा किया गया है कि 28 मई और 29 मई को कंपनी के कस्टमर केयर विभाग में शिकायतें दर्ज कराई गईं। शिकायत संख्या एमयूएम 12805260029 और एमयूएम 129052600014 जारी होने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं किया गया। आरोप है कि कई दिनों तक कोई तकनीकी सहायता उपलब्ध नहीं कराई गई, जबकि उस समय मुंबई सहित देश के कई हिस्सों में भीषण गर्मी और हीटवेव जैसी परिस्थितियां बनी हुई थीं।

सबसे बड़ा सवाल-2026 में खरीदे एसी को कंपनी ने बताया 2014 का?

मामले ने तब नया मोड़ ले लिया जब कथित रूप से कंपनी के प्रतिनिधियों ने यह कहकर सेवा देने से इंकार किया कि एयर कंडीशनर वर्ष 2014 में खरीदा गया था और उसकी वारंटी समाप्त हो चुकी है। संजय शर्मा का कहना है कि उनके पास जनवरी 2026 की खरीद से संबंधित सभी वैध बिल और दस्तावेज मौजूद हैं। ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि यदि उत्पाद हाल ही में खरीदा गया था तो उसे 2014 का बताने का आधार क्या था?

ओ जनरल के जवाब का इंतजार

मामला केवल एक एयर कंडीशनर की मरम्मत तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वारंटी, ग्राहक सेवा और उपभोक्ता अधिकारों के पालन को लेकर भी गंभीर प्रश्न खड़े कर रहा है। अब सभी की निगाहें इस बात पर हैं कि ओ जनरल इन आरोपों पर क्या प्रतिक्रिया देता है और उपभोक्ता की शिकायत का समाधान किस प्रकार करता है।

दिल्ली सरकार की लापरवाही से गई 21 की जान : सौरभ भारद्वाज

» आप नेता ने भाजपा सरकार पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आप के दिल्ली अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने 3 जून को राजधानी में बार-बार होने वाली आग की घटनाओं के लिए राज्य सरकार की आलोचना की, हाल की त्रासदियों का हवाला देते हुए मालवीय नगर में लगी आग में 21 लोगों की मौत के बाद अग्निशमन प्रतिक्रिया और जवाबदेही में विफलताओं का आरोप लगाया। भारद्वाज ने पिछली आगजनी की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसी घटनाएं बिना किसी जवाबदेही के एक नियमित प्रक्रिया बन गई हैं। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि देखिए, फरवरी में पालम में आग लग गई थी। तीन लड़कियों समेत नौ लोग जिंदा जल गए।

दमकल की लिफ्ट नहीं खुली और दमकल कर्मियों ने कोई कार्रवाई नहीं की। यह सब सबके सामने आया। सरकार ने कहा कि वे जांच करेंगे। तीन महीने बीत चुके हैं, लेकिन जांच रिपोर्ट अभी तक नहीं आई है। उन्होंने आगे कहा कि इसी तरह की समस्याएं अन्य मामलों में भी हुई हैं। भारद्वाज ने हाल ही में मालवीय नगर में हुई घटना का जिक्र करते हुए कहा कि विवेक विहार में आग लग गई। दमकल कर्मियों के पास पानी नहीं था, पानी का दबाव भी कम था। नौ लोगों की मौत हो गई। कोई रिपोर्ट नहीं आई। अब यहां 20-21 लोग जलकर मर चुके हैं। अधिकारियों पर देरी से प्रतिक्रिया देने का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि दमकल सेवा का प्रतिक्रिया समय बहुत खराब है। आग लगने की सूचना मिलने के बाद 45 मिनट से डेढ़ घंटे का समय लगता है। वे भी डेढ़ घंटे में यहाँ पहुंचे। उन्होंने आगे सरकार पर जिम्मेदारी लेने के बजाय निवासियों को दोषी ठहराने का आरोप लगाया। लेकिन सरकार क्या कह रही है? सरकार ने अपने सभी उपाय सक्रि य कर दिए हैं। वे गरीब लोग जो मजबूरी में अफ्रीका और अन्य देशों से यहाँ आए हैं और छोटे घरों और होटलों में रह रहे हैं। आप उन्हें दोषी ठहरा रहे हैं।

आयरलैंड दौरे से पहले भारत को मिलेगा टी20 का नया कप्तान

» श्रेयस अय्यर, तिलक वर्मा और संजू सैमसन के नाम पर चल रहा विचार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव की कप्तानी पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, चयनकर्ता आगामी आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे से पहले टी20 टीम की कमान किसी नए खिलाड़ी को सौंपने पर विचार कर रहे हैं। सूर्यकुमार का हालिया प्रदर्शन उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा है। सूत्रों के अनुसार चयनकर्ताओं ने आईपीएल के बाद सूर्यकुमार की फॉर्म का आकलन किया, लेकिन वे बल्लेबाजी में प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहे। ऐसे में अब भारतीय टी20 टीम के लिए नए कप्तान की तलाश तेज हो गई है।

फिलहाल तीन नाम सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। इनमें श्रेयस अय्यर, तिलक वर्मा और संजू सैमसन का नाम शामिल है। तीनों खिलाड़ियों के पास अलग-अलग कारण हैं जो उन्हें कप्तानी का मजबूत दावेदार बनाते हैं। अगर अनुभव के आधार पर देखा जाए तो श्रेयस अय्यर सबसे मजबूत दावेदार नजर आते हैं। श्रेयस भारत के लिए सीमित ओवरों में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। उनकी सबसे बड़ी ताकत दबाव में शांत रहना और मैच की परिस्थितियों को समझना मानी जाती है। यही वजह है कि चयनकर्ताओं की पहली पसंद के तौर पर उनका नाम सामने आ रहा है। वहीं 23 वर्षीय तिलक वर्मा को भारतीय क्रिकेट का भविष्य माना जा रहा है। चयनकर्ताओं ने हाल ही में उन्हें श्रीलंका में होने वाली त्रिकोणीय सीरीज के लिए भारत-ए टीम की कप्तानी सौंपी है, जिसे उनके नेतृत्व कौशल की परीक्षा के तौर पर देखा जा रहा है। मुख्य कोच गौतम गंभीर की पसंद बताए जा रहे संजू सैमसन भी कप्तानी की दौड़ में बने हुए हैं। सैमसन ने पिछले कुछ वर्षों में टी20 क्रिकेट में लगातार प्रभाव छोड़ा है। हालिया टी20 विश्व कप में भी उन्होंने अहम पारियां खेलकर टीम को फाइनल तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका निभाई थी। इसके बाद आईपीएल में सीएसके की तरफ से खेलते हुए उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया।

सौरव गांगुली की सुरक्षा में कटौती

कोलकाता। पूर्व भारतीय कप्तान और क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल (सीएबी) के अध्यक्ष सौरव गांगुली की सुरक्षा व्यवस्था में कटौती की गई है। उनकी सुरक्षा को (जेड) कैटेगरी से घटाकर (वाई) कैटेगरी कर दिया गया है। गांगुली को पिछले कुछ वर्षों से जेड श्रेणी की सुरक्षा दी जा रही थी। हालांकि, हालिया सुरक्षा समीक्षा के बाद राज्य प्रशासन ने उनकी सुरक्षा श्रेणी में बदलाव करने का फैसला लिया है। सरकार के इस कदम को राज्य में बदले राजनीतिक समीकरणों के संदर्भ में भी देखा जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, सौरव को वर्ष 2023 में तत्कालीन ममता बनर्जी सरकार ने जेड श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की थी। उस समय उनकी सुरक्षा में 30 से 35 पुलिसकर्मी तैनात रहते थे, जबकि उनके काफिले के साथ पायलट वाहन भी चलता था। नई व्यवस्था के तहत सुरक्षा कर्मियों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आएगी। राज्य में नई सरकार बनने के बाद मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने स्पष्ट किया है कि केवल उन्हीं व्यक्तियों को अतिरिक्त सुरक्षा दी जाएगी, जिनके लिए वास्तविक सुरक्षा खतरे का आकलन किया गया है।

कर्नाटक के नए सीएम शिवकुमार को केंद्र पूरा सहयोग देगा : मोदी

» प्रधानमंत्री ने नए मुख्यमंत्री को दी बधाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 3 जून को कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने पर डीके शिवकुमार को बधाई दी और उनके कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि केंद्र सरकार जन कल्याण के लिए राज्य के साथ सहयोग करेगी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि डीके शिवकुमार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने पर हार्दिक बधाई। उनके कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं। केंद्र सरकार जनता के कल्याण के लिए कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर काम करेगी।

लोक भवन में आयोजित एक समारोह में डीके शिवकुमार ने 34वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली, जो राज्य में नेतृत्व परिवर्तन का प्रतीक है। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता जी परमेश्वर ने उपमुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। इस अवसर के महत्व के प्रतीक के रूप में भारत के संविधान की एक प्रति अपने साथ लिए हुए, शिवकुमार ने वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं, धार्मिक नेताओं और भारत भर के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में शपथ ली।

बेशर्मी से पद पर बने हुए हैं अक्षम शिक्षामंत्री

» जयराम रमेश बोले- इतने सबूत के बाद भी प्रधान को क्यों बचा रहे पीएम मोदी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सीबीएसई के ऑन-स्क्रीन मार्किंग (ओएसएम) विवाद पर शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को अक्षमता के बावजूद पद पर बने रहने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उनके बचाव पर तीखा हमला बोला है। रमेश ने सीबीएसई मूल्यांकन प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी और तकनीकी खामियों को नजरअंदाज करने का आरोप लगाते हुए छात्रों के बढ़ते असंतोष पर चिंता व्यक्त की। यह बयान शिक्षा मंत्रालय में उच्च स्तर पर जवाबदेही की कमी को उजागर करता है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर अपने हमले तेज करते हुए कहा कि अक्षमता के लगातार सबूत सामने आने के बावजूद मंत्री बेशर्मी से अपने पद पर बने हुए हैं।

रमेश ने एक पोस्ट में सीबीएसई मूल्यांकन प्रक्रिया में अनियमितताओं की कई रिपोर्टों का हवाला देते हुए आरोप लगाया कि मोदी लगातार विफलताओं के बावजूद शिक्षा मंत्री को बचा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सीबीएसई के नेतृत्व में भले ही फेरबदल हो गया हो, लेकिन मंत्री प्रधान अपने मंत्रालय की अक्षमता और भ्रष्टाचार के सबूतों के सामने आने के बावजूद बेशर्मी से अपने पद पर अड़े हुए हैं। कांग्रेस नेता ने बोर्ड की ऑन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली में पारदर्शिता की कमी का दावा किया और आरोप लगाया कि सीबीएसई अधिकारी खरीद प्रक्रिया के संबंध में शिक्षा पर संसदीय स्थायी समिति द्वारा उठाए गए सवालों का जवाब देने में असमर्थ रहे। उन्होंने कहा कि मीडिया रिपोर्टों से हमें पता चला है कि सीबीएसई दिग्विजय सिंह की शिक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति द्वारा ओएसएम की खरीद के संबंध में उठाए गए सवालों का जवाब नहीं दे सका।

ट्रायल रन में भाग लेने वाले कई प्रतिभागियों ने सिस्टम में खामियों को किया उजागर

उन्होंने कहा कि सीबीएसई द्वारा अपने ओएसएम सिस्टम के ट्रायल रन की जांच से पता चला कि ट्रायल रन में भाग लेने वाले कई प्रतिभागियों ने सिस्टम में खामियों को उजागर किया और सीबीएसई से अनुरोध किया कि जब तक सभी खामियां दूर नहीं हो जातीं और सभी मूल्यांकनकर्ताओं को प्रशिक्षण नहीं दिया जाता, तब तक इसे लागू करने में देरी की जाए। सीबीएसई ने न केवल ओएसएम को लागू करने में देरी करने की इस समझदारी भरी सलाह को नजरअंदाज किया, बल्कि प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए कई विशिष्ट मुद्दों को हल करने में भी विफल रहा।

कृष्ण के प्रेम के मर्म को दर्शाती कृष्णावतारम्

पांच हजार साल पहले के भारत को देखना हो तो जरूर देखें ये फिल्म, ब्रज और द्वारका की भव्यता देख गदगद हो जाएगा मन

» निर्माता साजन व निर्देशक हार्दिक का कमाल

» सिद्धार्थ ने कृष्ण व सुष्मिता ने राधा को अभिनय से किया जीवंत

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। कभी घर-घर जाकर अखबार डालने वाले एक व्यक्ति साजन राज ने अपने विजन से एक ऐसी फिल्म बना डाली है जिसने पूरी दुनिया को एकबार फिर भगवान कृष्ण के विचारों से साक्षात्कार करा दिया है।

जी हां हम उस निर्माता की बात कर रहे हैं जिसमे राधा-कृष्ण के प्रेम को लेकर फिल्म बनाई है कृष्णावतारम पार्ट 1: हृदयम। यह फिल्म बॉक्स आफिस पर तहलका मचा रही है। अगर आपने फिल्म नहीं देखी है तो जरूर देखे। यह फिल्म आज की नफरती दुनिया में प्रेम का संदेश देती है।

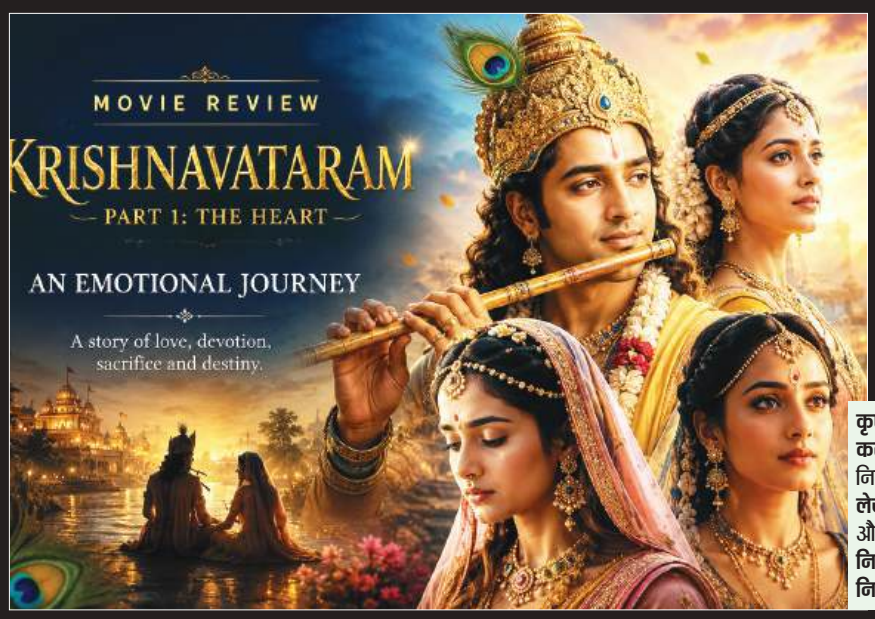

कृष्ण के पात्र के लिए सिद्धार्थ गुप्ता का चयन जन्मपत्री देखकर किया

कृष्ण के पात्र के लिए सिद्धार्थ गुप्ता का चयन किया। उनके चयन के लिए उनकी जन्मपत्री देखी। उनपर शुक्र का प्रभाव दिखा। मुझे वह भगवान कृष्ण की भूमिका के लिए उचित लगे। उनके पहले ही डायलॉग से मुझे लग गया कि यह पात्र धमाका करेगा। फिर अन्य कलाकारों को ढूंढा। इन सबमें कृष्ण के तत्व आ गए हैं।

कृष्णावतारम् पार्ट 1 : हृदयम
कलाकार: सिद्धार्थ गुप्ता, सुष्मिता भट्ट निवासिनी कृष्णान और संस्कृति जयना
लेखक : हार्दिक गज्जर , प्रकाश कपाड़िया और राम मोरी।
निर्देशक: हार्दिक गज्जर
निर्माता: साजन राज कुरूप और शोभा संत

काफी रिसर्च व मुश्किल से बनाई क्लासिक मूवी : साजन

मूलतः केरल के रहने वाला हैं निर्माता साजन हालांकि उनकी कर्मभूमि अहमदाबाद रही । उनके पिता ने हमेशा उन्हें अपने पैरों पर खड़ा रहने की सीख दी। उन्होंने 14 साल की उम्र में अखबार डालना शुरू किया। धीरे-धीरे मेहनत से मार्केटिंग की और एक एडवरटाइजिंग कंपनी में काम किया। लिखने का शौक था तो लेखक बन गये। इस दौर में 11 देशों मे काम किया । फिर बेंगलौर से होते हुए मुंबई आ गए और नौकरी छोड़ अपना काम शुरू किया। कई लोगों को जोड़ा पर पैसे की कमी थी। पर किसी तरह सबको जुटाकर काम शुरू किया। सबने हर मुश्किल मे साथ दिया। उन्हें नौ साल की उम्र से फिल्मों का शौक था। साजन ने बताया कि मैंने 40 से 45 एड फिल्में बनाई। आर बाल्कि उन्हे मुंबई लेकर आये थे। बाद में मैने प्रोड्यूसर बनने का मन बनाया। लंदन की कंपनी को टेकओवर किया वहां से हालीवुड से फिल्मों का बिजनेस सीखा। फिर दुनिया भर में जाकर रिसर्च किए इस दौरान बड़े-बड़े लोगो के साथ काम किया।

70 से 80 करोड़ में बनी फिल्म कृष्णावतारम्

साज ने कहा कि किसी फिल्म को बनाने के लिए समय की बहुत महत्ता होती है। वैदिक संस्कृति पर पीएचडी कर रहा हूं। मै भगवान कृष्ण से बहुत प्रभावित हूं। उनके संघर्ष व लीलाओं को लेकर उस पर काम शुरू किया। पूरी टीम ने साथ दिया। 70 से 80 करोड़ के पूरे बजट का 25 प्रतिशत मैने अपनी बचत से दिया। फिर दुनिया के कई जगहों से तकनीक की मदद ल और बृहत स्तर की मूवी बनाई। शूटिंग से दस दिन पहले कुछ लोगों ने हाथ भी खींचा पर भगवान कृष्ण के नाम में फिल्म शुरू की। मुंबई व गुजरात में शूटिंग की। फिल्म के ड्रेस, सेट सब पर दिल से काम किया। काफी ऑडीशन के बाद कलाकारों को चुना। फिल्म का नाम पहले राधारमण था बाद में सारे अधिकार लेने के बाद इसका नाम कृष्णावतराम् रखा। चूकि भगवान कृष्ण बहु आयामी है इसलिए इस फिल्म को तीन भाग में लाएंगे पहला कृष्णावतराम् हृदयम, दूसरा मन: जिसमे कृष्ण की नीति के बारे में फिल्मांकन होगा और तीसरा भाग होगा आत्मा पर जो भगवत गीता के दर्शन को दिखाएगा। दूसरे भाग की शूटिंग जल्द शुरू होगी और इसे 2027 के अंत तक लाने की कोशिश की जाएगी।

उप्र के लोगों को जरूर देखना चाहिए ये फिल्म

श्रीकृष्ण के प्रेम और समर्पण को दर्शाती फिल्म 'कृष्णावतारम पार्ट 1: हृदयम' थिएटर्स में रिलीज हो चुकी है। पूरी दुनिया में यह फिल्म तहलका मचा रही है। भारत मे यह प्रदर्शित हो गई है। लोग इसे देखने जा रहे हैं। यूपी के लोगों को खासतौर से इस फिल्म को जरूर देखनी चाहिए क्योंकि भगवान कृष्ण का पूरा बचपन मथुरा-वृंदावन व ब्रज की गलियों में बीता था। आज भी इस क्षेत्र में राधा-कृष्ण लोगों को अपने बीच में होने का आभास करवाते हैं। अगर आपको भव्यता का आनंद लेना हो तो इसे थिएटर में ही पूरे परिवार के साथ जरूर देखें। इसे देखकर आपको पुराणों और आस्था से जुड़े कई सवालों के जवाब जरूर मिलेंगे।

जब दुनिया में नफरत फैल रही है तब यह फिल्म प्रेम का संदेश देती है

श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करती अब तक कई फिल्में आपने देखी होंगी पर इन दिनों थिएटर में जो 'कृष्णावतारम पार्ट 1, हृदयम' रिलीज हुई है इसे मिस मत करिएगा। ऐसी फिल्में देखने जाने से पहले मन में सबसे पहला सवाल यही आता है कि इसमें नया क्या होगा? पर मेरी मानिए बिना कुछ सोचे जाइये और यह फिल्म देख आइये। ये आपके बरसों पुरानी वही कहानी एक ऐसे कमाल के अंदाज में दिखाएगी कि आप खो जाएंगे और द्वापर युग में जाकर भगवान श्री कृष्ण को महसूस करने लगेंगे। तीन भागों में बनी इस फिल्म का पहला पार्ट कृष्ण की प्रेम कहानी और उनके समर्पण पर आधारित है। आज जब दुनिया में नफरत फैल रही है उस समय यह फिल्म प्रेम का संदेश देती है। **फिल्म की कहानी:** यह फिल्म शुरू होती है भालका तीर्थ से। यह वहीं जगह है जहां श्रीकृष्ण ने अपने प्राण त्यागे थे। आगे बताया जाता है कि जगन्नाथ पुरी मंदिर में जो कृष्ण की मूर्ति में उसमें आज भी उनका दिल धड़कता है। जब स्वामी (जैकी श्रॉफ) श्रीकृष्ण की कथा सुनाते हैं तो विज्ञान और आस्था के बीच बहस शुरू होती है। इसके बाद कहानी द्वापर युग में जाती है, जहां श्रीकृष्ण (सिद्धार्थ गुप्ता) का जन्म, गोकुल से वृंदावन जाना, द्वारकाधीश बनना, राधा (सुष्मिता भट्ट) से मिलना और रुक्मिणी (निवासिनी कृष्णन) व सत्यभामा (संस्कृति जयना) से विवाह करने तक की कहानी दिखाई जाती है। यह फिल्म महाभारत की शुरुआत पर खत्म होती है पर अभी इसे दो पार्ट और आना बाकी हैं, जिनमें आगे की कहानी दिखाई जाएगी।

शानदार निर्देशन

इस फिल्म के निर्देशक हार्दिक गज्जर इससे पहले टीवी शो 'देवों के देव-महादेव' का भी निर्देशन कर चुके हैं। वह शो भी अपने आप में कल्ट था। इसके अलावा हार्दिक, नीना गुप्ता को लेकर अचारी बा जैसी फिल्में बना चुके हैं। वो फिल्में छोटे बजट की थीं पर बड़ी खूबसूरती से पेश की गई थीं। यहां हार्दिक का बजट बड़ा है और स्केल भी पर इस फिल्म को भी उन्होंने खूबसूरती से संभाला। प्रकाश कपाड़िया और राम मोरी के साथ मिलकर उन्होंने जो इसकी कहानी लिखी है वो बयां करने का तरीका कुछ अलग ही है। फिल्म की सबसे खूबसूरत बात यह है कि इसका वीएफएक्स कहीं भी ओवर नहीं होता। द्वारका हो या वृंदावन असली सा लगता है। भव्य सेट और भव्य गाने, फिल्म के विजुअल्स देखकर आपकी आंखे खुली ही रह जाती है। फिल्म में रंगों की कोई कमी नहीं है। पूरे ढाई घंटे तक स्क्रीन किसी कैनवास की तरह नजर आती है। कई सीन ऐसे हैं कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इनमें से एक है जब श्रीकृष्ण, द्रौपदी को उनके मांगे हुए वरदान पर तथास्तु कहते हैं। वहीं कई दृश्य ऐसे हैं कि लगता ही नहीं आप फिल्म देख रहे हैं। बाकी हर चीज में हार्दिक ने सटीक काम किया है। किसी भी तरह से फिल्म को भटकने नहीं दिया।

मनमोहक संगीत

फिल्म में कई गाने हैं। ये सभी गाने इरशाद कामिल ने लिखे हैं। श्रेया घोषाल और सोनू निगम की आवाज में ये कानों में मिश्री सी घोल जाते हैं। ज्यादातर कान्हा की प्रेमलीला का वर्णन करते हैं। ये सभी सुनने में अच्छे लगते हैं पर कुछ एक जगह फिल्म की गति को धीमा करते हैं।

हार्दिक गज्जर ने किया निर्देशित

हार्दिक गज्जर द्वारा निर्देशित फिल्म कृष्णावतारम् आस्था, दर्शन और भावनाओं का एक बेहतरीन संगम है। यह एक्शन से ज्यादा कृष्ण के प्रेम और मानवीय मूल्यों को दर्शाती है। सिद्धार्थ गुप्ता और सुष्मिता भट की एक्टिंग ने दर्शकों का दिल जीत लिया है। यह फिल्म पारंपरिक एक्शन और महाभारत युद्ध से हटकर, भगवान कृष्ण के जीवन, दर्शन और प्रेम को आधुनिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से पेश करती है। सिद्धार्थ गुप्ता (कृष्ण के रूप में) ने अपनी भूमिका में गहरी छाप छोड़ी है। वहीं, सुष्मिता भट और संस्कृति जयना का अभिनय भी काफी प्रभावशाली है। फिल्म का संगीत बहुत ही मधुर और सुकून देने वाला है। इसके विजुअल्स और भव्य दृश्य आपको सिनेमा हॉल में बांधे रखने का काम करते हैं। यह एक क्लासिक और गंभीर फिल्म है। यदि आप भक्ति, अध्यात्म और भावनाओं से जुड़ी फिल्में देखना पसंद करते हैं, तो यह आपके लिए एक बेहतरीन अनुभव साबित होगी।

सभी ने किया शानदार अभिनय

फिल्म की सबसे अच्छी बात यही है कि इसके मुख्य कलाकार नए और प्रेश हैं। यहां मेकर्स ने किसी ए लिस्टर को लेकर कोई एक्सपेरिमेंट नहीं किया। कृष्ण के किरदार में सिद्धार्थ गुप्ता बखूबी जमे हैं। उनके चेहरे पर मासूमियत और डायलॉग डिलिवरी में ठहराव है। बस कुछ दृश्य में उनकी विग साथ नहीं देती पर इसे इग्नोर कर सकते है। कमाल ही बात यह है कि वो जिस खूबसूरती से प्रेम दर्शाते हैं, उनके चेहरे पर क्रोध की भावना भी उतना ही जमती है। दूसरी तरफ राधा के किरदार में सुष्मिता भट्ट हर फ्रेम में कमाल लगी हैं। वो इस किरदार में पूरी तरह फिट हैं। ऐसा लगा जैसे उन्होंने राधा के किरदार को आत्मसाध कर लिया हो। वहीं रुक्मिणि के किरदार में निवासिनी कृष्णन और सत्यभामा के किरदार में संस्कृति जयना ने भी कमाल अभिनय किया है। इन चारों कलाकारों ने इन लीड किरदारों की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। बाकी फिल्म में जैकी श्रॉफ, अमनजोत सिंह, दीपक डोबरियाल, गोविंद नामदेव, जरीना वहाब, कुमुद मिश्रा और आशुतोष राणा समेत कई बड़े कलाकार अपने छोटे छोटे किरदारों में छाप छोड़ जाते हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा